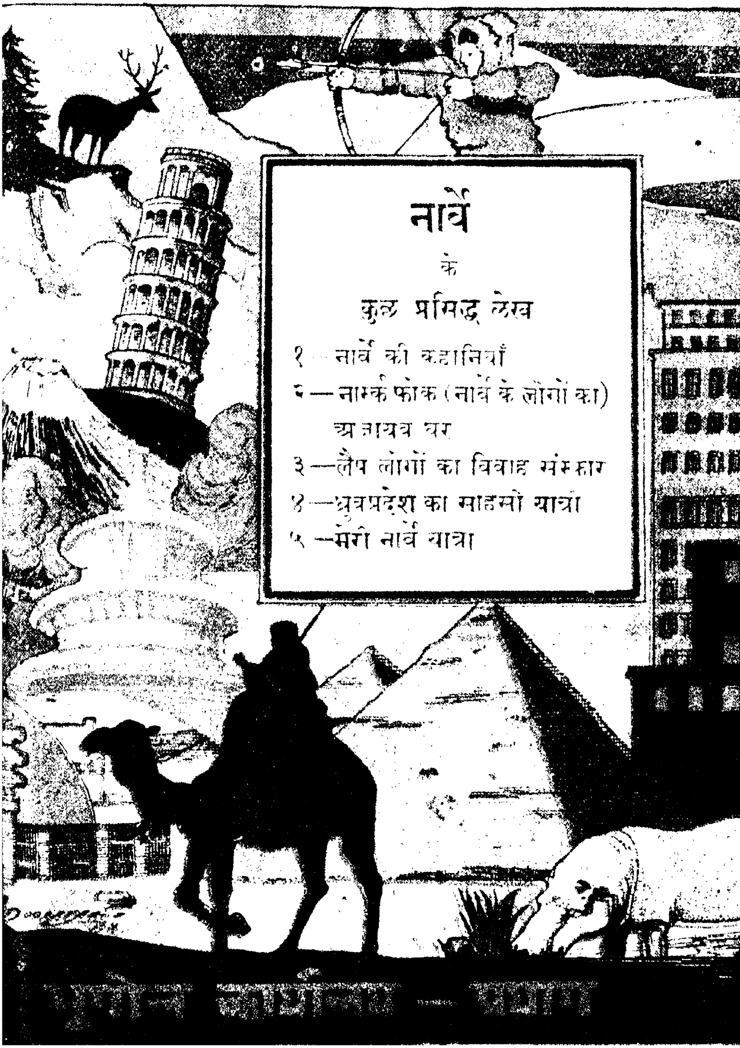
देश दर्शन

नार्वे


नार्वे
के
कुल प्रसिद्ध लेख
१—नार्वे की कहानियाँ
२—नार्स्क फोक (नार्वे के लोगों का) अजायब घर
३—लैप लोगों का विवाह संस्कार
४—ध्रुवप्रदेश का साहसी यात्रा
५—मेरी नार्वे यात्रा
भूगोल कार्यालय — प्रयाग

सितम्बर १९४०] **देश-दर्शन** [भाद्रपद १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या ३

नार्वे

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची



लैप लोगों का डेरा। सामने रेनडियर स्लेज (बिना पहिये की) गाड़ी खींचने के लिये तयार है।



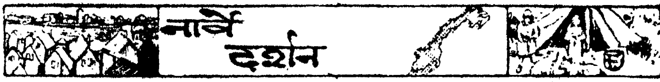
गरम खाल में लिपटा हुआ लैप बालक और उसकी माँ। इस ठंडे देश में छोटे बालकों को इसी प्रकार बाहर ले जाने में आसानी होती है।

नार्वे

नार्वे का देश स्केण्डीनेविया प्रायःद्वीप का पश्चिमी भाग है। इसके पूर्वी बड़े भाग में स्वीडन देश स्थित है। यह प्रायःद्वीप योरुप के उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर एक थैले की तरह लटका हुआ है। यहां के पुराने लोगों का विश्वास है कि ईश्वर ने इतना सुन्दर संसार बनाया कि दैत्यराज (शैतान) को इसे देख कर बड़ी जलन हुई। दैत्यराज ने क्रोध में आकर ऊपर से एक बड़ी चट्टान पृथ्वी पर फेंकी। यह चट्टान आर्क्टिकसागर के पास आकर पृथ्वी पर अटक गई। इस तरह स्केण्डीनेविया प्रायःद्वीप बन गया। इस पहाड़ी चट्टान पर कोई चीज़ नहीं उगा सकती थी। फिर ईश्वर को ध्यान आया कि पृथ्वी के बनने के बाद कुछ मिट्टी बच गई। उसी को उसने स्कैंडीनेविया में छिड़क दिया। लेकिन वह इतनी थोड़ी थी कि स्कैंडी-

नेविया के कुछ ही भागों को ढक सकी। इसी से यहां के बहुत थोड़े भाग उपजाऊ हैं।

नार्वे की यह कथा सत्य हो या न हो। लेकिन आजकल के भूगर्भ-विद्या के पंडितों का मत है कि स्कैण्डीनेविया उस विशाल महाद्वीप के बचे हुये अंग हैं जो किसी समय में योरुप से अमरीका तक फैला हुआ था। जब यह महाद्वीप डूबा तो केवल ऊँचे भाग अर्थात् स्कैंडीनेविया आयसलैण्ड, फेरो, शेटलैण्ड और स्काटलैण्ड शेष बच गये।



नार्वे की कहानियां

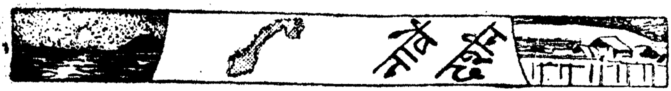
१—थार ने मिडगार्ड (पृथ्वी) सर्प का शिकार कैसे किया ।

थार पृथ्वी के बाहर एक युवक के भेष में निकला । वह संध्या होते होते हाइमीर नामक राक्षस के घर पहुँचा । उसने वह रात वहीं बिताई । जब वह सवेरे उठा तो उसने देखा कि वह देव मछली का शिकार करने के लिये तयारी कर रहा था । थार ने राक्षस से प्रार्थना की कि आप मुझे भी अपने साथ शिकार के लिये बोट (नाव) में ले चलें ।

राक्षस ने उत्तर दिया तुम जैसे छोटे क़द वाले आदमी मुझे क्या सहारा दे सकते हैं और फिर मैं जितनी दूर शिकार करने जाता हूँ और जितनी देर वहां रुक सकता हूँ यदि तुम मेरे साथ जाओगे तो अवश्य मर जाओगे । थार ने उत्तर दिया आप इसकी चिंता न करें

आप जहाँ तक चलना चाहेंगे मैं बोट खेता चलूँगा और फिर देखूँगा कि आप जल्दी लौटना पसंद करते हैं या मैं। थार को राक्षस पर बड़ा क्रोध आ गया था वह उसके सिर पर हथौड़े से चोट करना चाहता था परन्तु समय तथा संयोग ठीक न समझ कर वह रुक गया। उसने अपने क्रोध को दबाते हुये कहा अच्छा तो फिर मछलियों के चारा के लिये क्या ले चलना होगा। हाइमीर ने उत्तर दिया तुम स्वयम् ढूँढ़ सकते हो। थार शीघ्र ही राक्षस के बैलों के पास गया और वह राक्षस के सर्व प्रसिद्ध हिमिनब्रजोट नामक बैल का सिर काट कर ले आया। वे दोनो बोट में बैठ कर शिकार के लिये चल बसे।

जब थार ने पूरे बल के साथ बोट खेई तो वह बेग के साथ चलने लगी। राक्षस को उस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। जब राक्षस उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ पर वह मछली मारने जाता था तो उसने थार को रोका और कहा आगे जाना खतरनाक है क्योंकि वहाँ पर मेडगार्ड सर्प रहता है, परन्तु थार बोट को खेता ही चला गया। अन्त में थार ने खेना बन्द किया और



मछली वाले कांटे को निकाल कर उसमें उसी बैल के सिर को लगाकर समुद्र में डाल दिया। भारी होने के कारण वह शीघ्र ही समुद्र की तह में पहुँच गया। वहां पर मिडगार्ड सर्प था। वह विशाल सर्प धोके में आ शिकार की ओर लपका और उसने चारे को पकड़ लिया। डोर का कांटा जो बहुत बड़ा था वह सर्प के ज़ोरों से चुभ गया।

चोट खा कर सर्प ने बल पूर्वक खींचा थार ने डोर को दोनों हाथों से मज़बूती के साथ पकड़ लिया। थार ने अपनी ईश्वरीय शक्ति का प्रयोग करके खींचना आरम्भ किया। अधिक ज़ोर पड़ने के कारण उसका पैर बोट के भीतर होकर समुद्र तल तक पहुँच गया। उसने अपने हाथ के सहारे सांप को बोट के बग़ल में खींच लिया। वहां पर सर्प और थार में जो भयानक युद्ध हुआ उसको लिखना असम्भव है। थार क्रोध में आकर सर्प पर आक्रमण कर रहा था और सर्प भी उसके ऊपर विष की वर्षा कर रहा था। कहा जाता है कि जब राक्षस ने विशाल सर्प को देखा तो भय के मारे पीला पड़ गया और उसके होश-हवास उड़ गये। वह

कांपने लगा। जब राक्षस ने देखा कि चारों ओर से बोट में पानी आ रहा है तो उसने अपना चाकू निकाल कर कांटे की डोर को काट दिया। डोर कटने से सर्प फिर समुद्र में चला गया।

थार को भी राक्षस पर क्रोध आया और उसने हथौड़े से उस पर चोट की। थार ने हाइमीर के ऐसा घूसा कान के समीप मारा कि वह सिर के बल समुद्र में गिर पड़ा। कुछ लोगों का कहना है कि अब भी वह समुद्र की तह में जीवित है। उसके पश्चात् थार ने बोट खेई और शीघ्र ही किनारे पर आ लगा।

२—ओलफ ट्राइगवासन की कहानी

हराल्ड फेअर हेअर का पौत्र और ओलफ ट्राइगवासन का पिता विकेन में एक स्वतंत्र सरदार था। उसकी हत्या हो जाने के बाद उसकी स्त्री एक झील में एक द्वीप के अन्दर जाकर रहने लगी। उसी द्वीप के अन्दर ओलफ का जन्म हुआ। हत्यारे के भय से ओलफ की मां बच्चे को लेकर रूस चली गई जहां पर ओलफ ने अपने चरित्र का निर्माण किया।

१००० ई० में ओलफ ने डेन्स लोगों से समुद्र में युद्ध किया था। वहाँ उसके सारे साथी मारे गये और वह भी बुरी तरह घायल हुआ। जब उसके शत्रुओं ने उसे पकड़वाना चाहा तो उसने अपनी ढाल से अपने को छिपा लिया और पानी के भीतर डूब गया। इस युद्ध का वर्णन स्वीडन के इतिहास में है।

ओलफ नार्वे फिर लौट कर नहीं गया। उसके साथी लोगों को विश्वास था कि वह मारा नहीं गया इसलिये शीघ्र ही यह कहानी बन गई कि वह समुद्र में जहाज़ के नीचे डूब कर बच गया है। कहा जाता है

कि उसने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिया था और साधु बन गया था। वह रोम तथा दूसरे पवित्र स्थानों का भ्रमण करता रहा। अन्त में उसने ईश्वर के द्वार पर उपवास और प्रार्थना करते हुये अपने प्राण त्याग दिये।

रूसी दरबार में ६ साल रहने के पश्चात् १६ साल की अवस्था में ओलफ समुद्री डाकू की दशा में बाल्टिक सागर में आया और वहाँ पर वेल्ड राजा की पुत्री से व्याह कर लिया। अन्त में वेल्ड राजा के साथ वह ओथो नामक चक्रवर्ती राजा के साथ डेनमार्क की चढ़ाई में गया उसके पश्चात् वह अपनी स्त्री के देश में आया और तीन साल रहा। स्त्री की मृत्यु हो जाने पर वह अपना मल्लाही जीवन व्यतीत करने लगा। वह इंगलैंड, स्काटलैण्ड, आयरलैण्ड, फ्रान्स आदि देशों के तहों का भ्रमण करने के बाद सिसली पहुँचा वहां पर वह ईसाई धर्म में सम्मिलित हो गया। कुछ लोगों का कहना है। उसका ईसाई संस्कार (बपतिस्मा लण्डन और रुआँ में हुआ था। शायद उस काल के उत्तरी लोगों की भांति वह भी अपने नास्तिकता को प्रत्येक देश में छोड़ने की घोषणा करता रहा

धीरे धीरे ओलफ के बहादुरी के कामों का समाचार नार्वे के अत्याचारी राजा को ज्ञात हुआ। वह बड़ा भयभीत हुआ कि कहीं ओलफ, हराल्ड हर्फगेर के नार्वे सिंहासन के लिये हकदार न बन जावे। इसलिये हाकोन अपने दूत थारेर क्लाका को डबलिन भेजा कि वह जाकर ओलफ को बुरी आदतों में फँसा दे। उस समय ओलफ डबलिन में रहता था और उसने आयरलैण्ड के एक नार्चमन राजकुमारी से व्याह कर लिया था। थारेर आयरलैण्ड कई बार जा चुका था। वह ओलफ के पास गया और उसने कहा कि डेनमार्क की प्रजा अत्याचारी राजा से बड़ी अप्रसन्न है और वह अपने प्राचीन राजा के वंश वाले को खुले हाथों लेने के लिये तयार है।

ओलफ उसकी बातों में आ गया और उसके साथ नार्वे को चल पड़ा। नार्वे में आकर उन्होंने देखा कि सचमुच वहां बहुत से लोग हाकोन के विरुद्ध हथियार लेकर खड़े हो गये हैं। थारेर को यह देख कर बड़ी परेशानी हुई। उसने हाकोन को ढूँढ़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह न मिला। हाकेन अपने शत्रुओं के भय से भाग गया था और बहुत दूर एक गुफा में एक थारेर

नामक स्त्री के साथ जा छिपा था। थारेर ने ओलफ से नार्वे में उतर कर जाने के लिये कहा कि वह चल कर आदमियों को अपने साथ मिला लें। पर वास्तव में वह युवक राजकुमार को धोका देकर मारना चाहता था परन्तु ओलफ को उसकी बातों से कुछ शंका हो गई और उसने उसे मरवा डाला। उसके बाद हाकोन के विरुद्ध नार्वे में बलवा हो गया और उसे उसके एक गुलाम ने मार डाला। हाकोन का लहू से भरा फिर ओलफ के पास वह गुलाम लेकर आया, ओलफ ने उसे प्राण दण्ड दे दिया। उसके बाद दोनों सिर फांसी के स्थान पर लटका दिये गये। इन पर देखने वालों ने पत्थरों की खूब वर्षा करके अपनी घृणा प्रगट की।

नार्वे की प्रजा ने ओलफ को राजा चुना क्योंकि एक तो वह हेराल्ड प्रथम का वंशज था दूसरे उसकी बहादुरी, बुद्धिमत्ता और कीर्ति चारों ओर विदेशों में फैली हुई थी।

३—फेनरिस भेड़िये की कहानी

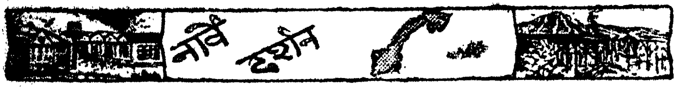
फेनरिस नामक भेड़िये का पालन पोषण देवताओं ने किया था परन्तु केवल टीर ही ऐसा था जिसका साहस उसे भोजन देने के लिये होता था। देवताओं ने देखा कि वह दिन प्रति दिन ताज़ा होता जाता था। इसलिये उन्होंने लीडिंग नामक एक मज़बूत लोहे की ज़ंज़ीर उसे बांधने के लिये तयार की। उस ज़ंजीर को देवता गण उसके पास ले गये और उसे तोड़ने के लिये कहा भेड़िये ने उसे बड़ी सरलता से तोड़ डाला। तब देवताओं ने एक दूसरी ज़ंजीर उससे डेढ़गुनी मज़बूत तयार की, और उससे भेड़िये को बांधना चाहा। इस दूसरी ज़ंजीर का नाम ड्रोमी था। देवगणों ने फेनरिस से कहा कि इस ज़ंजीर को तुम गले में डाल लो और इसे तोड़ कर अपनी प्रबल शक्ति का परिचय दो। यदि तुम इसको तोड़ने में समर्थ होगे तो हम समझेंगे कि तुम बड़े सूरमा हो।

फेनरिस ने देखा कि ड्रोमी ज़ंजीर पहले वाली लीडिंग ज़ंजीर से कहीं अधिक मोटी और मज़बूत है। उसने

सोचा कि ड्रोमी को तोड़ना सरल कार्य नहीं है परन्तु इसके तोड़े बिना मेरी ख्याति भी न होगी। इसलिये अपना नाम कमाने के लिये उसने खुशी खुशी उस ज़ंजीर को अपने गले में डाल लिया। जब वह ज़ंजीर में बँध गया तो उसने उसे तोड़ने के लिये अपने शरीर को फुलाया और ज़ोर से खींचा। वह खींचते खींचते पृथ्वी पर लेट गया। अन्त में ज़ंजीर तड़ाक से टूट कर चारों ओर तितर बितर हो गई। फेनरिस को उस ज़ंजीर से भी स्वतंत्रता मिल गई।

इसके बाद देवतागण फेनरिश को फिर बांधने से निराश हो गये। उनकी निराशा देख कर देवताओं के राजा ने फ्रेनो दूत स्क्रिमी को डार्क एलवेश देश भेजा और दूत वहाँ गया। उसने एक बौने को कहा कि वह ग्लीपनिर नामक जीर तयार करे।

यह ज़ंजीर छः वस्तुओं (१) बिल्ली की आहट, (२) स्त्री की दाढ़ी, (३) पत्थरों की जड़, (४) रीछों की नसें, (५) मछली की सांस (६) और चिड़ियों की राल से बनाई गई थी।



इस ज़जीर का बनना आश्चर्यजनक बात थी क्योंकि स्त्रियों के दाढ़ी नहीं होती, बिल्ली के चलने से शब्द नहीं पैदा होता और पत्थर के जड़ नहीं होती। परन्तु हम जानते हैं कि संसार में बहुत सी वस्तुएँ ऐसी हैं जिनका कोई प्रमाण नहीं है फिर भी संसार के लोग उन्हें सत्य मानते हैं। उसी प्रकार यह भी सत्य हो सकता है।

यह संकरी बनाई गई। यह बड़ी कोमल, बराबर और पतली थी। जब यह बना कर देवताओं के पास ले आई गई तो उन्होंने दूत को बहुत धन्यवाद दिया। देवतागण भेड़िये को एम्सवार्टगिर नामक द्वीप के झील लींग्वी में ले गये और उस संकरी को उसे दिखा कर कहा कि तुम इसे पहन कर तोड़ो। देवताओं ने भेड़िये से कहा कि यद्यपि यह संकरी पतली है तो भी यह पहले वाली संकरियों से कहीं अधिक मज़बूत है।

सभी देवताओं ने उसे अपने हाथों में लेकर तोड़ने का प्रयत्न किया परन्तु जब वह न टूटी तो उन्होंने भेड़िये से कहा भाई तुम्हारे में ही इस ज़जीर को तोड़ने की शक्ति है।

भेड़िये ने उत्तर दिया कि ऐसी पतली संकरी को तोड़ने में क्या नाम होगा और यदि उसमें कोई खास कारीगरी की गई है तो इसे तोड़ने का प्रयत्न ही नहीं करूँगा।

देवताओं ने भेड़िये को विश्वास दिलाया कि जब वह मोटे मोटे सँकड़ों को तोड़ चुका है तो उसे पतली कोमल संकरी को तोड़ने में देरी न लगेगी और यदि संयोग से वह न टूटी तो फिर देवतागण उसे छुटकारा दे देंगे क्यों कि भेड़िये की शक्ति का उन्हें पता चल जावेगा कि वह कमज़ोर है और उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता है।

भेड़िये ने उत्तर दिया कि यदि मैं इस ज़ंजीर में बांधा गया और तोड़ न सका तो फिर आप लोग मुझे ज़ंजीर से छुड़ाने का कष्ट ही क्यों करेंगे। इसलिये मैं शपथ खाता हूँ कि इसे अपने गले में नहीं बांध सकता परन्तु हां यदि आप मेरी शक्ति का अन्दाज़ करना चाहते हों तो फिर ऐसा कीजिये कि आप में से कोई भी मेरे मुंह में अपना हाथ डाल दे जिससे मैं पकड़े रहूँ और मुझे विश्वास रहे कि आप मेरे साथ छल नहीं कर रहे हैं।

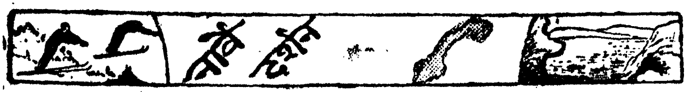
जब देव गणों ने अपने को दो संकटों के बीच में देखा तो एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। आखिर टीर आगे आया और उसने अपना हाथ उसके मुंह में डाल दिया। देवताओं ने संकरी को भेड़िये के गले में बांध दिया। उसने अपने शरीर को फुलाया और भरसक तोड़ने का प्रयत्न किया परन्तु जितना ही वह उसे तोड़ने की कोशिश करता था उतनी ही वह ज़ंजीर कड़ी होती जाती थी। अन्त में सभी देवतागण हँसने लगे। भेड़िये ने टीर का हाथ काट डाला।

जब देवताओं ने देखा कि भेड़िया भली भांति बंध गया है तो उन्होंने गेल्गजा नामक ज़ंजीर जो ग्लीयनिर पर्वत में बँधी थी लेकर जोल नामक शिला में बांध दिया और अधिक मज़बूती के लिये उन्होंने गेल्गज के छोर को थ्वाटी नामक शिला में बांध दिया।

भेड़िये ने संकरी को तोड़ने के लिये बड़ा ज़ोर मारा परन्तु वह न टूटी तो उसने अपने जबड़े को खोल कर देवगणों को काटना चाहा। जब देवगणों ने देखा कि वह मुँह फैलाये है तो उन्होंने उसके मुँह में तलवार भोंक दी। भेड़िया ज़ोरों से चिल्लाने लगा और

अन्त में उसके मुँह से फेचकुर (झाग) बहने लगा। जिससे वोन नदी बन गई तब से आज तक वोन नदी झाग की बह रही है। वह भेड़िया वहां रैगनारोक (प्रलयकाल) तक वैसा ही रहेगा और नदी बहती रहेगी।

गंगलेर ने हार से पूछा कि जब उस भेड़िये का बंश इतना दुष्ट है तो देवगणों ने उसे मार क्यों नहीं डाला था ? हार ने उत्तर दिया कि देवगण शान्ति तथा अहिंसा को बहुत पवित्र समझते हैं इसी कारण उन्होंने उसे मार कर अपने को अपवित्र नहीं किया यद्यपि यह आकाश वाणी हुई थी कि वह एक दिन उनके सर्वनाश का कारण होगा।



एड्डास की कहावतें

१—यात्री को बुद्धि की आवश्यकता होती है।

२—पियक्कड़ जितना ही पीता है, उसकी बुद्धि उतना ही कम होती जाती है, अन्त में उसको तर्क-शक्ति का अंत हो जाता है।

३—जब तक कोई स्वयम् निरपराध न हो उसे दूसरे पर हँसने की आवश्यकता नहीं है।

४—अपना घर चाहे जितना छोटा हो परन्तु वह सबसे अच्छा है।

५—अपने मित्र तथा मित्र के मित्र को प्यार करो परन्तु अपने शत्रु के मित्र से प्रेम न करो।

६—पल मारते धन का नाश होता है, यह सभी मित्रों से अधिक अस्थिर है।

७—दिन की प्रशंसा अंत होने पर, स्त्री की मरने पर, तलवार की प्रयोग करने पर, युवती की ब्याह होने पर, बरफ की प्रशंसा पार करने पर और मदिरा की प्रशंसा पीने पर करनी चाहिये।

८—एक दिन की जमी हुई बरफ पर विश्वास न करना चाहिये।

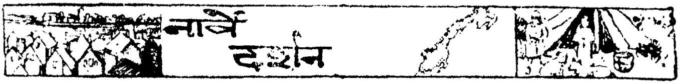
९—अपने मित्र से पहले मित्रता भंग मत करो। जिसके कोई सलाहकार नहीं होता उसका हृदय दुखता है।

देश दर्शन

ब्वायनिस हिमानी (ग्लेशियर) और नदी

नार्वे का दृश्य बड़ा रोमाँचकारी है। वहाँ के पर्वत बड़े विशाल और लम्बे चौड़े हैं। वहां पर बहुत सी झीलें ऐसी हैं जो समुद्र तल से हज़ारों फुट ऊँची हैं। विशाल लम्बे चौड़े बर्फीले मैदान ऐसे हैं जहां पर सदैव बरफ जमी रहती है। बहुत सी गहरी घाटियां हैं जिनके ऊपर विशाल हिमानी लटकी हुई हैं। वे बरफ की विशाल नदी की भांति धीरे धीरे नीचे की ओर चलती हैं। वे समुद्र की ओर अथवा किसी गर्म स्थान की ओर कोलाहल करती हुई जाती है जहां से उनके आगे बढ़ना रुक जाता है।

नार्वे की नदियां बड़े बेग के साथ समुद्र की ओर बहती हैं। उनके पर्वतीय भागों में विशाल, अलौकिक और भयानक प्रपात हैं, जो हज़ारों फुट की ऊँचाई से गिरते हैं। उन प्रपातों की सुन्दरता अवर्णीय है। उनके प्रपातों तथा एक शिला से दूसरे शिला पर गमन करने से जो शब्द होता है वह बड़ा ही आकर्षक तथा रोमांचकारी होता है।



नार्वे के फियर्डों की सुन्दरता अद्वितीय है। यह नालियां तथा सरिताएं हैं, यह बड़ी गहरी होती हैं और इनके भोतर से पानी प्रवेश करके किसी बड़े मैदान में जा निकलता है। इनमें प्रपात हैं। ऊँचे-नीचे पर्वतों में सूर्य-प्रकाश वाले मैदान, घाटियाँ, घास के मैदान और धुंधले बन हैं। इन सरिताओं के इधर उधर लोगों के निवास स्थान भी बने हुये हैं।

यह कहना कठिन है कि यह फियर्ड शीतकाल में अथवा ग्रीष्म काल में अधिक सुन्दर होते हैं। ग्रीष्म काल में इनके ऊपर सूर्य की सुनहरी किरणें नृत्य करती हैं। पर्वतों की हरी और लाल छाया इनपर पड़ती है। जाड़े में चन्द्रमा का धुँधला प्रकाश इन पर पड़ता है और बर्फीले चोटियों की छाया शोभायमान होती है। दोपहर होने के पहले ही तारागण निकल आते हैं जिनकी सुन्दरता कदाचित ही कभी देखने में आती हो। नक्षत्रों का धुँधला प्रकाश जो एक चोटी से दूसरी चोटी पर पड़ता है उसकी प्रतिमा इन सरिताओं में बड़ी शोभायमान होती है।

ओसलो की विजय

नाज़ी सरकार ने ओसलो पर धोकेबाज़ी और जालसाज़ी से अधिकार जमाया है। जब जर्मन सेना ओसलो में घुसी तो उसकी संख्या ३००० थी। इस सेना ने बड़े भारी धोकेबाज़ी से काम लिया। ओसलो राजधानी की २,५०,००० प्रजा जर्मन सेना के चक्कर में आ गई। सैनिक लोग ५० और १०० की टोली में नगर के अन्दर परेड (चक्कर) करते थे। सैनिक लोग गाने गाते थे।

जर्मन सेना ने गाने तथा संगीत के हथियार का प्रयोग ओसलो में किया है। इसी के कारण वहाँ के लोगों को धोका हुआ। मालूम होता था कि जर्मन सेना ने वहाँ के लोगों पर जादू डाल दिया था। जर्मन सेना के पास दो सैनिक बैंड तथा दो अकार्डियन बाजे थे।

नाज़ी नेताओं को साइकालोजी (मनोविज्ञान) का अच्छा ज्ञान है। इसी कारण मुट्ठी भर जर्मन सेना लगभग ३ लाख नार्वेजियन्स को अपने अधिकार में रख सकी।

जिस दिन नाज़ी सेना ने ओसलो पर अधिकार जमाया उसी दिन सवेरे कार्ल जोहन बावलेवर्ड के बगल वाले पार्क में जर्मन सेना ने अपने बैण्ड (फौजी बाजा) बजाने आरम्भ किये। यह स्थान ओसलो नगर के लगभग बीच में है। जर्मन गाने और बाजों को सुनने के लिये हज़ारों की भीड़ शीघ्र ही इकट्ठा हो गई थी। लोग आते थे और दस दस मिनट तक ठहर कर चले जाते थे। नार्वे के निवासी जर्मन को "रोल आउट दी बैरेल" नामक गान सुनाते थे परन्तु उनके ध्यान में रोल आउट दी जर्मन्स (जर्मनों को बाहर निकाल दो) का भाव नहीं उत्पन्न होता था।

गाते हुये सैनिकों की मार्च (चाल)

बुध के दिन जर्मन सेना चमकते हुये पिस्तौल लिये कार्ल जोहनबाउलेवार्ड पर गाते हुये मार्च कर रही थी। उसी समय पार्लियामेन्ट तथा सिटी हाल पर जो जर्मन सेना अधिकार जमाए पड़ी थी वह भी प्राचीन जर्मन गाने गा रही थी।

बृहस्पति को दोपहर के बाद जो संगीत जर्मन सेना ने गाया बजाया। वह बड़ा ही अनोखा तथा मार्मिक

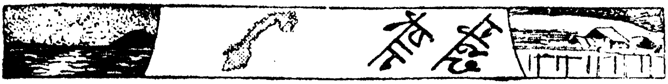
था। यह संगीत उस समय गाया गया था जब की २० हज़ार जर्मन सेना ओसलो हार्बर पर उतरी और जर्मन सेना को नार्वे पर अपने अधिकार का विश्वास हो गया।

जब २० हज़ार सेना ओसलो बन्दरगाह पर उतरी तो वह हथियार बन्द घाटों पर अर्ध व्यास में नगर के भीतर प्रवेश करने के गाने गा रही थी।

सैनिकों के संगीत ध्वनि से यह पता चलता था कि वह नवयुवक सैनिक आनन्द पूर्वक गा रहे थे। उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं थी और न उन्हें कोई आवश्यक कार्य ही करना था। वह बिलकुल निश्चिन्त प्रतीत होते थे।

ओसलो के कई हज़ार निवासी जर्मन सैनिकों का गान बड़े आनन्द के साथ दो घंटे तक सुनते रहे किन्तु उसके पश्चात् उनका भाव कुछ बदल गया। वे दो दिन तक बराबर जर्मन सैनिकों का बदला भाव देखते रहे और जब उन्होंने जर्मन सुसज्जित सेना, लड़ाई का सामान, जंगी जहाज आदि देखे तो उन्हें कुछ शंका सी उत्पन्न हो गई।

लोगों की त्योरियां बदलने लगीं और लोग धीरे-



धीरे अपने अपने स्थानों को जाने लगे। यद्यपि सैनिक बड़ी सुरीली ध्वनि से गा रहे थे और लोग अधिक से अधिक संख्या में सुनने को प्रभावित होते थे तो भी सैनिकों के पास आकर वे लौट जाते थे।

एक दूसरे स्थान पर सैनिकों की दो टोलियाँ साथ-साथ गा रही थीं। गाना राइन प्रदेश के किसी मुख्य स्थान की लड़कियों की सुन्दरता के बारे में था। गाने में सैनिक गा रहे थे "वहां की लड़कियाँ संसार में सबसे अधिक सुन्दर हैं हम उनसे प्रेम करना चाहते हैं......"

ओसलो के लोग इस प्रकार का गान श्रवण कर रहे थे। उन्हें पता नहीं था कि उनकी राजधानी पर आक्रमण हुआ है। लोग बड़े चाव से उनके समीप जाते थे किन्तु जब हज़ारों की संख्या में मशीनगन देखते और लड़ाई का सामान देखते तो उन्हें शंका उत्पन्न हो जाती थी। उसी समय कुछ जहाज सेना से भरे और वहीं आ गये जो लंगर डाल सैनिकों को उतारने का प्रयत्न कर रहे थे। जहाज पर बैठे सैनिक लोग गाने गा रहे थे जिनकी गूँजती आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

उसी दिन नार्वे पार्लियामेन्ट के सामने वाले पार्क

में संगीत आरम्भ हुआ। यह संगीत लगभग ११ बजे आरम्भ हुआ था और संध्या तक बराबर होता रहा। ऐसा गाना बजाना नार्वे में कदाचित ही कभी हुआ हो। १२ बैंडों की टोलियाँ बराबर अपने बैन्ड बजाती रहीं। मालूम होता था कि वे बड़े निश्चिन्त हैं और किसी प्रकार की कोई घटना अंसलो हार्बर पर नहीं हो रही है।

जर्मन बैण्ड पर सैकड़ों अमेरिकन गाने बजाने हुये उसके बाद जर्मन गाने हुये और नाज़ी मार्च हुई। उस स्थान पर दर्शकों की भीड़ किसी समय भी दो तीन सौ से कम नहीं हुई। संध्या समय पांच हज़ार जर्मन सेना फिर आई। जर्मन सैनिकों ने अपने गाने रात्रि हो जाने पर बन्द किये।

शुक्रवार को सवेरे सभी प्रकार के गाने बजाने बन्द हुये। अब धोका देने का समय बाक़ी न रहा था और अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने को थे।

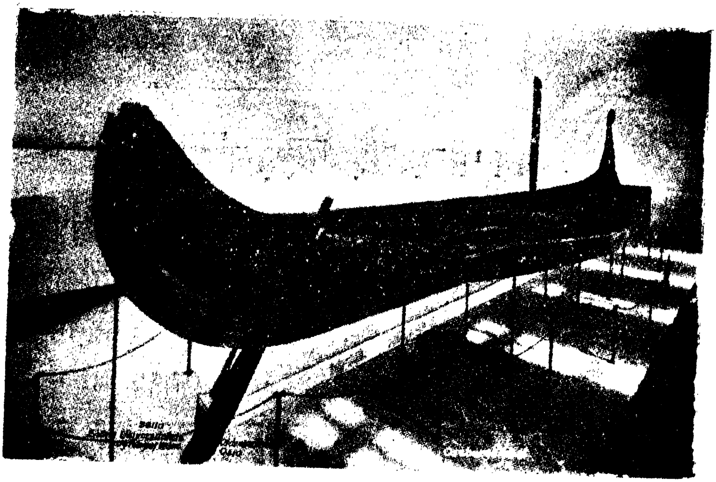
उसके पश्चात् एक रेडक्रास संस्था की स्त्री द्वारा ज्ञात हुआ कि एक नार्वे का व्यक्ति गोली से मार दिया गया है। उसने चलने से इनकार कर दिया था।

नार्वे में नाज़ी विश्वासघात

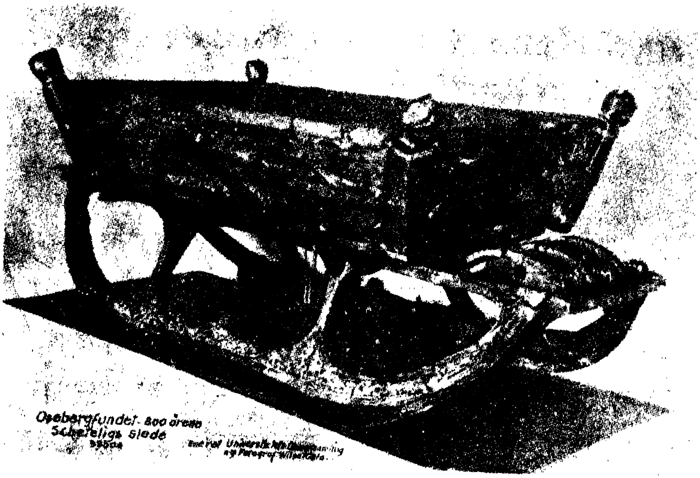
जर्मनी ने नार्वे पर अचानक अधिकार कर लिया। इस भेद का रहस्य यह है कि जर्मनी ने नार्वे के सिविलियनों तथा कुछ फ़ौजी अफसरों को घूस देकर मिला लिया था। जर्मनी के प्रतिनिधि तथा प्रचारक जो नार्वे में थे उन्होंने एक बहुत बड़ा षड्यन्त्र रचा और जालसाज़ी, धोकेबाज़ी तथा घूस की बदौलत उन्होंने वहां के अफसरों को मिला लिया था। यही कारण है कि जिसके फलस्वरूप जर्मनी ने यकायक शीघ्रता के साथ नार्वे की राजधानी ओसलो तथा वहां के मुख्य मुख्य बन्दरगाहों पर अधिकार बिना किसी युद्ध के ही कर लिया।

जर्मन षड्यन्त्रकारी

जब जर्मन आक्रमण का समय हुआ तो जर्मन षड्यन्त्रकारियों ने नार्वे की अधिकांश जलसेना पर अपना प्रभुत्व जमा लिया और भीषण क़िलों की शक्ति को क्षीण करके कमज़ोर बना दिया। नार्वे की सरकार की बागडोर केवल इने गिने चन्द आदमियों के हाथों में थी। यह लोग शासक थे। जलसेना में चालबाज़ी से



ओस्लो के अजायबघर में रक्खी हुई एक स्की बोट। यह बरफ और पानी दोनों पर चल सकती है।



ओस्लो के अजायबघर की एक पुरानी स्लेज गाड़ी। पहिये न होने पर भी यह बरफ पर चलती थी।

काम लिया गया था। इसलिये नार्वे के समुद्री द्वार बिलकुल खुले छोड़ दिये गये थे।

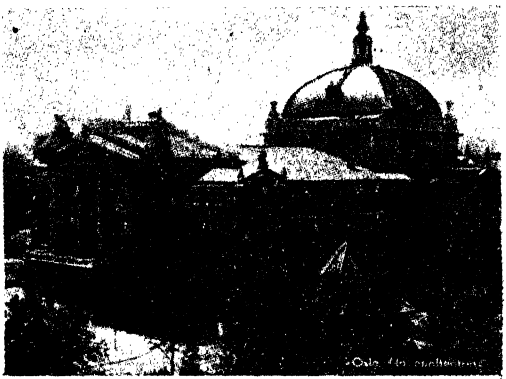


ओस्लो अजायबघर का एक विचित्र नमूना

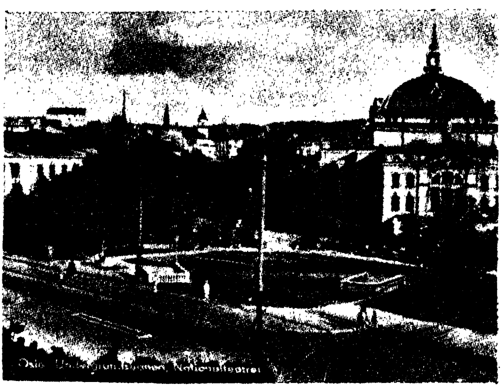
५ अप्रैल की रात को जर्मन लिगेशन की ओर से

देश दर्शन

नार्वे सरकार के २०० पदाधिकारियों को निमंत्रित

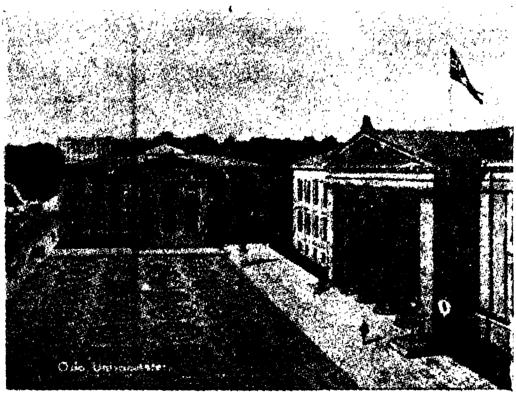


आस्लो का राष्ट्रीय भवन



आस्लो में राष्ट्रीय भवन के सामने का दृश्य

किया गया। यह लोग नार्वे के सब से बड़े प्रभुत्वशाली थे। नार्वे सरकार के सभी सदस्य निमंत्रित किये गये थे। उसी रात को जब कि इस ओर निमंत्रण का कार्य हो रहा था, उस ओर जर्मन जलसेना तथा जर्मन युद्ध-सामग्री लिये जर्मन जहाज़ नार्वे की ओर बढ़ रहे थे।

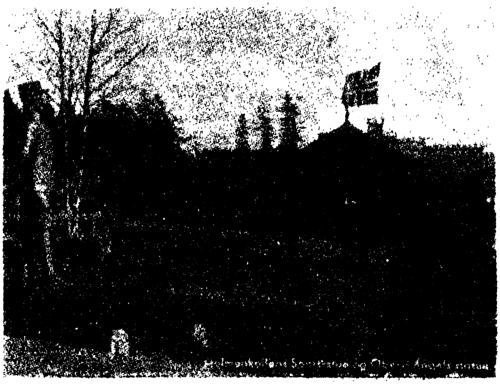


ओस्लो का विश्वविद्यालय

नार्वे जलसेना के प्रधान अफ़सरों को एक असाधारण फिल्म देखने के लिये बुलाया गया था। यह सिनेमा का खेल था। इसका शीर्षक बैप्टिज़्म आफ़ फायर (आग का बपतिस्मा) था। इस में जर्मन वायुयानों का भयानक आक्रमण जो पोलैंड पर हुआ था उसका चित्रपट

दिखाया गया था। यह चित्रपट इतना भयानक तथा त्रासदायक था कि एक घन्टे तक सभी लोग चुपचाप उसे बैठे देखते रहे।

तमाशे के अंत में जर्मन मन्त्री ने अपना भाषण उस चित्रपट के बारे में दिया और समझाया कि यह तमाम



खेल का क्लब घर और स्टेचू (विशाल मूर्ति)

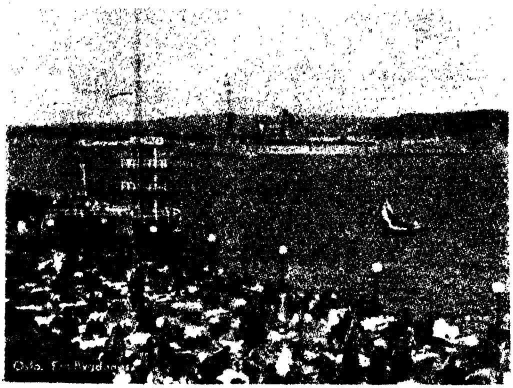
युद्ध सम्बन्धी नहीं वरन् शान्ति से सम्बन्ध रखने वाला है क्योंकि जो राष्ट्र युद्ध नहीं चाहते और शान्तप्रिय हैं वे अपनी प्रजा को ऐसी भयंकर क्षति से बचा सकते हैं।

उस रात को नार्वे के अफसर जर्मन लिगेशन से अपशकुन तथा उदासीन भाव से अपने अपने स्थान

गये। ९ अप्रैल को सवेरे ओसलो फजोर्ड तथा ओसलो पर जर्मन अधिकार हो गया।

प्रधान जहाज़ी अड्डा

हॉर्टेन नार्वे का प्रधान जहाज़ी अड्डा है। उस पर अधिकार किये बिना जर्मन सेना नार्वे में प्रवेश नहीं



ओस्लो का समुद्र-तट

कर सकती थी। ९ अप्रैल को १½ बजे सवेरे नार्वे के तीन लड़ाका जहाज़ों के प्रधान सेनापति को जो हॉर्टेन में था एक आवश्यक सूचना मिली। इसके तीन घन्टे बाद डाक्टर कोह्ट नार्वे वैदेशिक मन्त्री को जर्मनी ने अंतिम चेतावनी दी।

आवश्यक सूचना पर डा० कोह्ट के फर्ज़ी हस्ताक्षर थे और कहा गया था कि वह सूचना नार्वे सरकार की है और वैदेशिक विभाग द्वारा आई है।

सूचना में कहा गया था कि जर्मन सेना फियर्ड में शीघ्र ही आने को है उसे बिना रोक टोक आने दिया जाय और सारे नार्वे के सैनिक बिना हथियार के तट पर उतार दिये जायँ।

प्रधान सेनापति ने बिना किसी छानबीन किये ही अपने सैनिकों को तट पर उतर जाने की आज्ञा दे दी। जहाज़ पर केवल सामान तथा भोजनालय के कार्यकर्ता रह गये थे।

भयानक हिचक

होर्टेन में ८ अप्रैल को संध्या को नार्वे का सुरंग लगाने वाला जहाज़ मरम्मत के लिये आया था। इसी बीच ओसलो फजोर्ड की खाड़ी में सुरंगें लगा दी गई थीं। इन सुरंगों का सम्बन्ध ड्रोबक से था। ९ अप्रैल को १½ बजे प्रातः काल यह सुरंगें बेकार कर दी गईं। इनका सम्बन्ध बिजली द्वारा ड्रोबक से अलग कर दिया गया। किसकी आज्ञा से यह कार्य किया गया अभी तक किसी को मालूम नहीं हुआ। किन्तु इसके फलस्वरूप एक जर्मन

क्रूज़र जहाज़ ओसलो की खाड़ी में सूर्य निकलने के पहले ही प्रवेश कर गया।



ओस्लो फियर्ड का एक दृश्य। गरमी की ऋतु में भी यहाँ पानी बड़ा ठंडा रहता है। लेकिन स्नान करने वालों की भीड़ रहती है। घाट पर कुछ फीस देने पर नहाने का वस्त्र भी मिल जाता है।

साढ़े चार बजे जर्मन मन्त्री ने नाज़ी की अंतिम चेतावनी डा० कोहट को दिया। उसी समय एम्डेन तथा दो जर्मन पनडुब्बे हार्टेन पहुँचे।

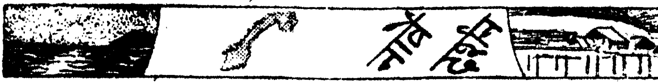
नार्वे के तीनों लड़ाकू जहाज़ बेकार थे। वहां पर

ओले ट्रैगावासन नामक (मरम्मत वाला) सुरंगी जहाज़ मौजूद था। उसने जर्मन जहाज़ों का मार्ग रोक दिया। उसने जर्मन टार्पीडो बोटों पर आक्रमण किया और एम्डेन तथा एक पनडुब्बे को डुबो दिया।

जब जर्मन सेना ओसलो में प्रवेश कर रही थी तो जनरल फाल्केन हार्स्ट और दो दूसरे अफ़सर सेना के साथ थे।

इन अफसरों को ओसलो के दर्शकों में से कितनों ही ने नाज़ी ढँग पर सलाम किये। जिससे मालूम होता है कि वे नाज़ी प्रतिनिधि रहे होंगे जो पहले ही से ओसलो में नाज़ी प्रचार कर रहे थे।

ओसलो की जनसंख्या ३ लाख के लगभग है। उसे केवल १५०० जर्मन सैनिकों ने अपने अधिकार में कर लिया। नाज़ी लोगों को किसी प्रकार के विरोध का नगर में सामना नहीं करना पड़ा।



लैपलैण्ड के रहने वालों का जीवन

नार्वे के दक्षिणी पर्वतों पर भी कभी कभी लैप लोग रेनडियरों (ध्रुव प्रदेश के हिरणों) का समूह लिये दिखाई पड़ते हैं। परन्तु उनका निवास स्थान सुदूर उत्तर में है। वे नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड और रूस के उत्तरी भाग में रहते हैं। वे जिस भाग में रहते हैं उसे हम लैप लैण्ड कहते हैं।

सारे लैपलैण्ड प्रान्त का क्षेत्रफल ३५ हज़ार वर्गमील है परन्तु नार्वे के लैपलैंड का क्षेत्रफल लगभग ४ हज़ार मील के है। सभी लैप लोग एक जाति के हैं। नार्वे के लैप लोगों की संख्या स्वीडन, फिनलैंड और रूस के लैपों से अधिक है। वे एशिया के मंगोल और एशिया निवासियों से मिलते जुलते हैं।

वे कम गोरे और कुरूप होते हैं। वे क़द के बहुत छोटे होते हैं। पाँच फुट का लैप वहाँ देव माना जाता है। परन्तु वे बड़े मज़बूत और परिश्रमी होते हैं। संसार की कदाचित् ही कोई दूसरी जाति परिश्रम करने में उनकी बराबरी कर सकती हो। वे बड़े गंदे होते हैं और

शायद ही कभी अपने बालों में कंघी करते हों तो भी वे बड़े प्रसन्न तथा स्वस्थ रहते हैं।

वे तीन भागों में विभाजित हो गये हैं। यह तीन पर्वतीय लैप, समुद्री लैप और नदी वाले लैप हैं। पर्वतीय लैप घूमने फिरने वाली जाति है। दूसरे दो श्रेणियों वाले लैप नदियों या समुद्रों के तट पर अपने निवास स्थान बना कर रहते हैं। उन्होंने अपनी जाति के प्राचीन रीति-रिवाज तथा रहन-सहन को बदल दिया है।

पर्वतीय लैप बड़े चंचल होते हैं। वे ग्रीष्म अथवा शीत काल सभी ऋतुओं में घूमते फिरते रहते हैं और शायद ही कभी वे तीन दिन से अधिक एक स्थान पर रुकते हैं। वे समय की बिलकुल परवा नहीं करते हैं। उनकी दिनचर्या कुछ भी नहीं होती और जब उनकी इच्छा होती है तो भोजन करते, पानी पीते और सोते हैं। कुछ कार्य वे नियम से करते हैं। वे ऋतु के अनुसार काम करते हैं और प्रत्येक साल एक ही मार्ग से वे भ्रमण करते हैं। उनके भ्रमण करने का हर साल एक ही नियम होता है।

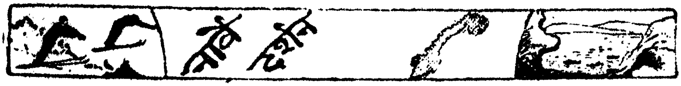
ग्रीष्म काल में वे समुद्र के किनारे रहते हैं। साल का शेष समय वे पर्वतों पर व्यतीत करते हैं। बड़े दिन के समय में वे किसी चर्च (गिरजे) के समीप निवास स्थान बनाते हैं। जब से वे लोग ईसाई धर्म के अनुयायी हुए हैं तब से बड़े दिन का समय उनके जीवन में बड़े महत्व का समय होता है। यदि वे साल के और किसी दिन में चर्च नहीं जा सकते तो बड़े दिन के समय वे अवश्य ही चर्च जाते हैं।

वर्तमान समय में वे नियमों को मानते हैं और शान्ति प्रिय हैं। वे लोग दयालु और अतिथि-सेवी और प्रसन्न चित्त होते हैं। कभी कभी वे बड़े निर्दयी और स्वार्थी भी हो जाते हैं। वे रुपये पैसे को बहुत प्यार करते हैं। शराब पीना भी उन्हें बहुत पसन्द है।

लैप लोगों के जीवन का आश्रय रेनडियर ही होता है। रेनडियर से ही उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। वे अपना भोजन, कपड़ा और आराम की वस्तुएँ उसी के द्वारा प्राप्त करते हैं। वही उनकी सम्पत्ति होती है और उसी पर उनका जीवन निर्भर रहता है। वे अपने रेनडियरों की आदतों के अनुसार ही अपनी

आदतें डालते हैं। जहाँ कहीं उनके रेनडियर चरने जाते हैं वे उनके साथ जाते हैं। बरफ के ऊपर वे अपने डेरे गाड़ कर रहते हैं। शिलाओं के नीचे उन्हें चराते हुए वे उन स्थानों पर सोना पसन्द करते हैं जहाँ का तापक्रम शून्य अंश से ७० अंश नीचे होता है। प्राचीन समय से ही उनका जीवन ऐसा ही रहा है और उन्हें किसी दूसरे प्रकार के जीवन का भास भी नहीं है। वे उसी प्रकार के जीवन से सन्तुष्ट रहते हैं। लैप-परिवार सभी ऐसे जीवन के अभ्यस्त (आदी) होते हैं उन्हें ऋतु की विषमता किसी प्रकार भी हानि नहीं पहुँचा सकती है।

लैप बच्चा एक अनूठे ढँग पर अपना जीवन आरम्भ करता है। जब तक वह चलने योग्य नहीं होता है वह कोम्से में रक्खा जाता है। कोम्से एक प्रकार का हिंडोला होता है जो लकड़ी की पट्टियों का बनाया जाता है, उसके ऊपर चमड़ा लगा रहता है। वह उतना ही बड़ा बनाया जाता है जिसमें बच्चा सरलता पूर्वक लेटाया जा सके। बच्चे को भेड़ की खाल में लपेट कर हिंडोले में लेटा दिया जाता है। उसके पश्चात् उसे सिवार से ढक दिया जाता है। बच्चे का केवल मुँह



खुला रहता है। बच्चे के सिर की रक्षा करने के लिये लकड़ी का टोप बनाया जाता है। शीत अधिक होने पर उसे शाल से ढक दिया जाता है। सचमुच ही जब बच्चा कोम्से में ठीक तौर पर लिटा दिया जाता है तो वह एक पारसल (गठरी) सा मालूम होता है। लैप परिवार इधर उधर घूमता रहता है और माताओं को अपना काम करना रहता है इस लिये वे बच्चे की अधिक देख भाल नहीं कर सकते। इस लिये बच्चे का इस प्रकार पालना बड़ा सुगम होता है। कोम्से के चारों ओर चमड़े की पट्टी लगी रहती है जिसके सहारे मां जब बाहर जाने लगती है तो अपने कंधे पर लाद ले जाती है। जब मां काम करती रहती है तो वह उसे डेरे के किसी खम्भे, अथवा वृक्ष की डाल के सहारे लटका देती है और काम करती रहती है। कोम्से को बरफ अथवा शिला में भी बांध दिया जाता है।

जब बच्चा बड़ा हो जाता है और चलने लगता है तो वह अपने माता अथवा पिता की भांति कपड़े पहनता है। उस समय वह बड़ा भला प्रतीत होता है। इन बच्चों का जीवन बड़ा ही सुन्दर होता है लड़कपन से ही वे डेरों को लपेटना और ले जाना सीखते हैं। वे रेनडियरों

की रखवाली करते हैं और लैसोज़ बरफ के जूतों और स्ली गाड़ियों के खिलौनों को खेलते हैं जिनका प्रयोग उन्हें अपने जीवन में करना पड़ता है। उनके माता पिता उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं कि वे जैसे सचमुच युवा हैं, उनसे अधिक से अधिक काम लेने की इच्छा रखते हैं और जैसा वे करते हैं वैसे ही उन्हें इच्छानुसार करने देते हैं इसी कारण वे अपने मन के हो जाते हैं और बड़ों का आदर नहीं करते।

लैप लोगों का जीवन हमारे यहां के जिपसी (घूमने वाली जाति) लोगों से मिलता जुलता है यद्यपि लैप लोग जिपसियों (गोरे नटों) से कहीं अच्छे होते हैं। लैप लोग पहले तो घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हैं उसके बाद फिर वे घर बना कर रहते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो अपना सारा जीवन घूमने फिरने में बिता देते हैं।

लैप लोग अपने 'घर' (डेरे) को अपने साथ लिये रहते हैं वे उसे इतना भारी रखते हैं जिसे वे रोज़ एक स्थान से दूसरे स्थान को हटा सकें। घर का सामान वे या तो रेनडियर की पीठ पर या स्ली गाड़ियों पर लाद कर ले जाते हैं। ग्रीष्म काल में रेनडियर की पीठ

पर और शीत काल में स्ली गाड़ी पर सामान लादा जाता है। उनका डेरा हमारे यहां के नटों (घूमने वाले लोगों) के डेरों से मिलता जुलता है। वे कुछ लकड़ी के खम्भे गाड़ देते हैं, उनका ऊपरी सिरा मिला रहता है। उसके ऊपर वे कच्चे ऊन का बना हुआ कपड़ा चढ़ा देते हैं। सामने की ओर द्वार रखा जाता है और ऊपर खम्भों के सिरों के पास खुला रहता है जिससे रोशनी आ सके और धुवां बाहर जा सके। डेरे का व्यास १२ से १४ फुट और बीच में डेरे की ऊँचाई ८ से १० फुट तक होती है। एक डेरे के भीतर ही उनके घर की सारी सम्पत्ति रहती है। वहीं पर उनका रसोई घर, कुठियार, सामान रखने का कमरा, बैठने का कमरा, भोजन करने का स्थान, सोने का कमरा आदि सब कुछ होता है। एक ही डेरे में स्त्री, पुरुष, लड़के, बच्चे, लड़कियां और कुत्ते सभी लोग रहते हैं।

डेरे के भीतर कुछ टहनियां बिछा दी जाती हैं, बीच में आग जला दी जाती है जो रात दिन जलती रहती है। आग के चारों ओर लोग दिन में बैठते हैं और रात को सोते हैं। डेरे में किसी प्रकार का सामान नहीं होता। वहाँ पर केवल कुछ भोजन बनाने के बर्तन, कुछ

काठ के कटोरे और कुछ काठ अथवा सींग के चम्मच होते हैं। उनके पास बिछौना, चारपाई, कम्बल आदि नहीं होते हैं। वे न तो नया कपड़ा पहनते हैं न उतारते हैं। वे सफाई करते ही नहीं।

जब सोने का समय आता है तो वे आग की बगल में पृथ्वी पर लुढ़क कर सो जाते हैं। वे वही कपड़ा पहने सोते हैं जिसे शायद तीन चार साल से बराबर पहने हुये होते हैं। उसी अवस्था में वे खर्राटे की नींद सोते हैं। कुछ लोग रेन्डियरों को ताकते रहते हैं। इस लिये सोने के लिये सदैव काफ़ी स्थान रहता है।

उन लोगों के भोजन का कोई निश्चित समय नहीं होता है, परन्तु उनका भोजन सदैव तयार रहता है। उनका भोजन आग के ऊपर एक बर्तन में लटकता रहता है। जब किसी को भोजन की इच्छा होती है वह हाथ डाल कर मास का टुकड़ा निकाल कर हड़प कर जाता है। लैप लोग रेन्डियर का मांस, मक्खन और लपसी का भोजन करते हैं। पानी, पिघली हुई बरफ, रेन्डियर का दूध और कभी कभी क़हवा पीने के लिये प्रयोग करते हैं। क़हवा पीने के वे लोग बड़े शौक़ीन होते हैं।

परन्तु बहुत कम लोग ऐसे हैं जो क़हवा पीने का व्यय संभाल सकते हैं। नगरों में वे लोग मदिरा का प्रयोग करते हैं।

पर्वतीय लैप लोग अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करते हैं। आज यदि कोई लैप वंश किसी स्थान पर है तो कल वह वहाँ से १२ मील की दूरी पर होगा। कभी कभी बहुत से लैप वंशों का एक स्थान पर समागम हो जाता है तो वे एक दूसरे की बड़ी आव भगत करते हैं। परन्तु अधिकतर लैप लोग अपने वंश अथवा झुन्ड के एक साथ स्थान पर रहते हैं क्योंकि यदि कई झुंड के लोग इकट्ठे हो जाते हैं तो फिर चराई में बड़ी झंझट उठानी पड़ती है। वर्षा से उनके डेरों में बाढ़ आ जाती है, बरफ पड़ने से वे ढक जाते हैं और तीव्र वायु उन्हें उड़ा ले जाती है तो भी लैप लोग जीवित रहते हैं और अपना स्वतंत्र जीवन आनन्द के साथ व्यतीत करते हैं।

समुद्री लैप लोगों का जीवन पर्वतीय लैपों के जीवन के अनुसार कम सुखमय होता है। वे लोग समुद्र के तट पर लकड़ी अथवा घास मिली हुई मिट्टी का झोपड़ा बना कर रहते हैं। नदियों के लैप लोग रेनडियर के

ढोर चराते अथवा मछली का शिकार करते हैं। वे लोग नदियों के समीप अपनी छोटी छोटी बस्तियाँ बसा कर रहते हैं वे लोग रेनडियर, गाय और भेड़ पालते हैं। अपनी बस्ती के समीप ही वे लोग कुछ खेती करते हैं। वे लोग कुछ पढ़े लिखे भी होते हैं। अब उनके बीच शिक्षा का प्रचार भी अधिक बढ़ रहा है।

धुर उत्तर की ओर का बाज़ार

लैप लोग बड़े सीधे-सादे होते हैं। वे अपने बर्फीले देश को बहुत प्यार करते हैं। धर्म प्रचारक और बस्ती बसाने वालों से उन लोगों ने कुछ पढ़ना लिखना भी सीख लिया है और सभ्य जीवन के कुछ नियमों का भी वह पालन करने लगे हैं। अधिकांश लैप लोग ईसाई हैं। परन्तु उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मूर्ति पूजक हैं। वह लोग कोट अथवा कुर्ता और पायजामा पहिनते हैं। चमड़े का प्रयोग अब उनके बीच कम हो रहा है और उसके स्थान पर नार्वे का 'वाडमल' नामक कपड़े का प्रयोग बढ़ रहा है। वे लोग रेनडियर के चमड़े का बूट और ऊन की टोपी पहनते हैं। स्त्रियां भी मर्दों की भांति

कपड़े पहनती हैं। स्त्रियों के गाऊन अथवा कुर्ते में चांदी या रंगीले चमकदार कपड़े की गोट लगी रहती है। कमर में पेटी होती है जो चांदी अथवा तांबे से सजाई रहती है पेटी में एक चाकू और एक कैंची लटकते रहते हैं। समुद्र के समीप रहने वाले लैप लोग नगरों के समीप रहना अधिक पसंद करते हैं। वे लोग सौदा करने में बड़े चतुर होते हैं। ग्रीष्म काल के यात्रियों को वे अपना पक्का मित्र बना लेते हैं। वे लोग यात्रियों के हाथ में रेनडियर के सींग, मक्खन और नक्काशी की हुई हड्डियां आदि बेचते हैं। इन लोगों के चेहरे एक दूसरे से भिन्न होते हैं। कुछ लैप लोग बड़े हँसमुख होते हैं। कुछ लोग लैपलैंड में जाकर बसने लगे हैं उनके और लैप लोगों के बीच शादी ब्याह आदि होने से लैप जाति के अंत हो जाने की सम्भावना है।

देश दर्शन

उत्तरी नार्वे के घर

नार्वे के उत्तरी भाग में लैप लोग बसे हैं। नार्वे के निवासी उन्हें लैप कहते हैं। लैप जाति घूमने फिरने वाली जाति है। लैप लोग अपने को समेह या समेलट कहते हैं। यह लोग किसी समय में स्केण्डीनेविया पर राज्य करते थे। परन्तु अब वहां उनकी संख्या केवल ३० हज़ार है। वे कहीं पर अपना स्थाई घर बना कर नहीं रहते हैं। वे अपना जीवन पौदों, जड़ों और रेंडियर के दूध तथा मांस पर व्यतीत करते हैं। वे लोग रेंडियरों का दूध सप्ताह में दो बार दुहते हैं और उससे मक्खन बनाते हैं। इन लोगों के पास लगभग २ लाख रेन्डियर हैं। ग्रीष्म ऋतु में लैप लोग रेन्डियर की खाल के डेरे बनाते हैं। रेन्डियरों का प्रयोग यह लोग बोझ ढोने तथा गाड़ी खींचने में करते हैं। शीत काल में वे तृणाच्छादित भूमि के झोपड़े बना कर रहते हैं। झोपड़ों में आग जलाने का स्थान मध्य में बनाया जाता है। अग्नि-स्थान की मिट्टी को पीट कर खूब पक्का कर लिया जाता है। छत में एक सूराख धुआं बाहर निकलने के लिये बनाया जाता है। डेरों में अपने शयन के लिये लैप लोग घास

और सेवार बिछाते हैं और उसे रेन्डियर का खाल से ढक देते हैं।

लैप लोगों का चेहरा कुछ त्रिभुजाकार होता है। उनके कपोल ऊँचे और नाक चपटी होती है। उनकी आँखें छोटी काली होती हैं। उनके बाल प्रायः काले और कभी कभी भूरे होते हैं।



नार्वे का लकड़ी का बना हुआ साधारण घर और सामान

यह लोग नाटे होते हैं परन्तु बड़े मज़बूत होते हैं। वे लोग कड़ी से कड़ी शीत का सहन कर सकते हैं। वे कई दिनों तक बिना भोजन-पानी के यात्रा कर

सकते हैं। वे बीसों मील की यात्रा बिना थके हुये कर सकते हैं। लैप लोग अपने कपड़े नहीं बदलते, वे पानी से बहुत डरते हैं। इसी कारण वे साँवले होते हैं। लैप बच्चों का चमड़ा स्वच्छ और स्वेत होता है। जो लैप स्थल में रहते हैं उन्हें जेल्ड अथवा स्थली लैप कहते हैं। कुछ लैप पानी पर वास करते हैं। वे जल वाले लैप कहलाते हैं। यह लोग अपना अधिकांश समय पानी में बिताते हैं। उनका पेशा मछली मारना है। वे गावों में घर बना कर रहते हैं।

नार्स्क फोक (नार्वे के लोगों का) अजायबघर

नार्स्क फोक म्यूजियम (अजायबघर) में वह सभी वस्तुएं एकत्रित हैं जो वहां की प्राचीन संस्कृति पर झलक डालती हैं। इस अजायबघर के दो भाग हैं।



फोक म्यूज़ियम में पुरानी कारीगरी का एक नमूना

एक नागरिक भाग और दूसरा देहाती भाग है। इन दोनों भागों में वस्तुएं ठीक तौर पर सजाई गई हैं। खुले मैदान में अजायबघर का जो भाग है उसमें फार्म हाउसेज़ (कृषि गृह) और नगर के सुन्दर भवन हैं। वहां

पर लगभग ५० हज़ार चीज़ें एकत्रित की गई हैं और लगभग ७० प्राचीन भवन हैं। प्रदर्शनी वाले गृह एक खुले मैदान के चारों ओर हैं। सिटीगेट (नगर द्वार) को पार करने के पश्चात् बाज़ार मिलता है। यह बाज़ार बहुत प्राचीन है और १६२८ से आज तक का यह बाज़ार इतिहास बताता है।

नया अजायबघर

प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर प्राचीन अनोखे कमरे हैं जिनके देखने से नार्वे के पिछले चार सौ वर्षों के घरेलू जीवन का हाल ज्ञात होता है। सब से नीचे वाले भाग में अठारहवीं सदी तक के घर हैं। उसके ऊपर उन्नीसवीं सदी तक के मकान हैं। इम्पायर रूम (साम्राज्य-भवन) के बाद प्राचीन पार्लियामेन्ट हाल है। यह हाल (बड़ा कमरा) १८१४ ई० में बना था और अब तक वैसा ही है। पहले यह हाल कैथेड्रल स्कूल का बड़ा कमरा था। उसके बाद वह नार्वे की पार्लियामेन्ट का हाल बनाया गया। नार्वे की पार्लियामेन्ट ७ अक्तूबर सन् १८१४ ई० को आरम्भ हुई थी। वहां पर क्रिश्च-

याना घराने के नमूने रखे हैं जो क्रिश्चियाना चतुर्थ से १८०० ई० तक के हैं। नीचे वाले घरों में नार्वे की प्राचीन भांति की सैकड़ों भट्टियां हैं।



नार्वे के फोक म्यूज़ियम (जनता के अजायबघर) का एक दृश्य

राइडिंग हाऊस (सवारी करने का भवन)

यह ओसलो के १८२६ ई० के भवन का एक प्रतिरूप है। यहां पर प्रान्तीय कमरे ठीक तौर पर सजाये गये हैं। प्रथम तीन कमरे मध्यकालीन तथा रिनायसंस

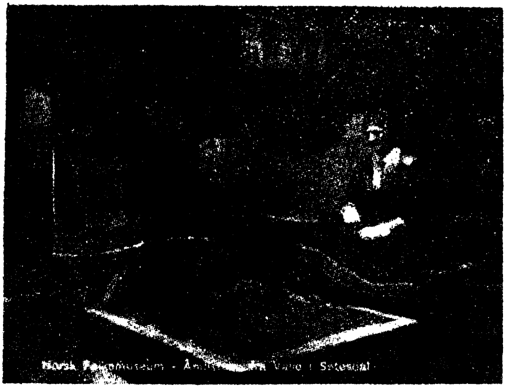
(नव युग) के जीवन का प्रदर्शन करते हैं। इनके आगे वाले कमरे भौगोलिक स्थिति के अनुसार प्रत्येक प्रान्त और ज़िले के प्रतिरूप बनाये गये हैं। उनमें से कोई कोई तो नार्वे की बहुत प्राचीन संस्कृत का परिचय देते हैं। अभाग्य वश उनमें से अधिकांश कमरे बन्द रहते हैं। परन्तु जो कमरे खुले हैं उनमें गुबरैंडस्डल की वस्तुओं का संग्रह है जिनमें लकड़ी की कला का प्रदर्शन बहुत किया गया है।

दूसरे तल्ले के कमरों में क्रमानुसार नार्वे के देहात और नगरों की उन्नति का प्रदर्शन है। वहां पर अग्नि प्रकाश और गर्मी पहुँचाने के औज़ार हैं। कमरों में रसोई घर और भोजन करने वाली मेज़ों के सामान हैं। इसके सिवा अलग कमरों में नार्वे के हाथ तक कारखानों के बने हुये चाँदी, टीन, शीशा, मिट्टी और रुई के बने हुये खिलौने हैं। उसी तल्ले में अजायब घर के प्रदर्शनी का बड़ा कमरा, एकरशश काउन्टी और हेफटाई कलेक्शन्स हैं।

चर्च

नार्वे के चर्चों की वस्तुएं १५५०-१८०० ई० तक

अजायबघर के चर्च में एकत्रित की गई हैं। उसमें स्ःवेञ्जर और डी० हेञ्जचेल चित्रकार की १६०० ई० की चित्रकारी बड़ी सुन्दर बनी है। वहां का पुरोहितासन तथा वेदी भी देखने योग्य हैं। वेस्टबी और संनर की वेदियों के सिवा वहां पर लकड़ी की खुदाई का अच्छा प्रदर्शन है।



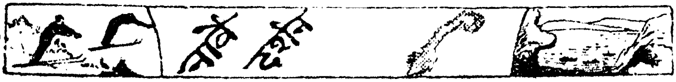
फोक म्यूज़ियम में बैठने की चौकियाँ

ओस्लो के प्राचीन घर के द्वार होकर हम फार्म विल्डिंग्म (कृषि भवन) पहुँचते हैं और फिर बाईं ओर की सड़क पर घूमते हैं। दाईं ओर स्टेस्टडल फार्मर्स के दो भवन एक दूसरे के समीप बने हैं। यह भवन नार्वे

के राज्य के स्थापित होने के पहले के हैं। उससे और बाहर की ओर अमाली का प्राचीन सुन्दर भवन है। एक खुला अग्नि-स्थान है जिसमें धुँवा निकलने के लिये चिमनी नहीं है। वहीं पर एक सीढ़ी है जिसके तीन तल्ले हैं। अमाली की बगल में एक बड़ी लकड़ो का बना हुआ नेवर्स 'लाफ्ट' है जिसमें लकड़ी की सुन्दर कला का प्रदर्शन किया गया है। छत से रंग महल के बीच में एक नवीन स्टूए बनाया गया है। पुरानी दीवार का कुछ भाग गिराकर एक घर बनाया गया है जिसमें दो कमरे हैं। दोनो कमरों के बीच में एक मार्ग है। उसी के समीप एक स्नान गृह है। यह बहुत प्राचीन भाव से स्नान करने का अच्छा प्रदर्शन है।

उपरोक्त भवनों के पीछे फिन्स्ल्वेन है। यह नार्वे में १७ वीं सदी के बसने वाले फिन लोगों का चिन्ह है। इसके जड़ और भट्टी से पता चलता है कि इसके बनाने वाले सवोलक्स के निवासी थे।

टेलेमार्क प्रधान सड़क पर है। पहले एक छत और एक लता मंडप है, जहाँ पर हर एक भांति की वस्तुएँ रक्खी हैं यह वस्तुएँ मो के रोफशश से आई हैं। उसके बाद



हिटरडल का एलिस्टुवेन भवन है। यह भवन बाद का बना हुआ है। इसके ऊपरी भाग में एक कमरा है जिसमें १८ वीं सदी स्मृतियां हैं। छोटे चित्रकारी किये हुये और रंगे हुये घरों के बाद हमें दाहनी ओर नुमेडल के तीन भवन मिलेंगे। इनमें पहला नार्वे का सबसे प्राचीन लकड़ी का बना घर है। यह तेरहवीं सदी के अन्तिम काल का बना हुआ है। इन भवनों में बड़े बड़े साधु और महात्मा रहा करते थे। इसमें धुएँ निकलने वाली चिमनी से प्रकाश आता है और एक पुरानी मेज़ तथा बेंच है। इसका फर्श मिट्टी पीट कर बनाया गया है। द्वारों पर सुन्दर खुदाई की गई है। दूसरे घर का फर्श लकड़ी का है जिसमें आग का स्थान, चिमनी, खिड़कियाँ और दूसरे सामान हैं। यह सब वस्तुयें ग्रेस्ली के फ्लेसबर्ग से आई हैं। तीसरा घर १८ वीं सदी के अंत का है। इसकी छत और छज्जे पर वर्तमान समय के सामान हैं।

इसके बाद हम फिर प्रधान सड़क पर आ जाते हैं। क्रिश्चियाना चतुर्थ के मील के पत्थर तथा हालिंगडल के गुल्सविक्स्ट ट्वैन के बाद हालिंगडल के लोगों के घर हैं। आँगन के आगे एक छत है जो उन्नीसवीं सदी की बनी हुई है।

इसके आगे होल के हाल्वरगार्ड का लफ्टस्टोए है। इसकी छत पर एक रहने का कमरा है। नीचे के तल्ले में एक आग जलाने का स्थान और चिमनी है। इसके भीतर के सामान से अनुमान होता है कि यह भवन नवयुग काल का है। इस स्थान पर अठारहवीं और सत्रहवीं सदी के और भी कई एक घर हैं।

और आगे चलकर बाईं ओर स्मेडस्टाड स्टोव्सएन है उसकी एक धन्नी में १७५१ ई० का वर्ष खुदा हुआ है। इस घर के देखने से पता चलता है कि नार्वे के पूर्वी भाग में १८ वीं सदी में किस प्रकार के घर बनाये जाते थे। वहाँ के सामान और जोड़ प्रारम्भिक हैं।

लोकेन्स्टोएन का रसोई घर तथा बोरसी १८ वीं सदी के बने हैं। यह स्मेस्टाड स्टोएन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

इसके पश्चात् एक मार्ग हाली स्टोएन को जाता है। हाली स्टोएन वाल्डेस में हैं। इसके भीतर के सामान नव-युग के सामान से मिलते जुलते हैं। कोने में एक बड़ा अग्नि स्थान चिमनीदार है। इसमें एक खास तरह की चिकनी प्रकाश के लिये लगाई गई है। इसके आगे

मील के पत्थर को पार करने पर काठ, कबाड़ की चीज़ों के रखने के घर हैं। यह आस्टरडल की पहाड़ी के ऊपर के दो घर हैं। एक घर ग्रीष्म काल के लिये और दूसरा शरद काल के लिये है। शीत काल वाले घर में प्रवेश करने वाले बड़े कमरे के ऊपर एक अनोखा बारफ्रो (कमरा) है।

ग्रीष्म काल भवन अमोत के किल्डे के बड़े फार्म से आया है। यह घर खूब सजाया हुआ है। शरद काल वाले मकान से हम चर्च सड़क से जाते हैं। मील वाले पत्थर पर सी० ६ क्रिश्चियाना चतुर्थ का चिन्ह है। पहाड़ी के नीचे पहाड़ी डायरी है।

वन की सीमा पर गौ-शाला है जिसमें पशु रक्खे जाते हैं उसी के समीप उससे छोटा एक घर बकरियों के बांधने के लिये बना है। यहाँ से दूध ले जाने वाली लड़कियां दूध अपने प्राचीन रसोई घरों और रहने के कमरों में ले जाती हैं और मक्खन पनीर बनाती तथा अपने घरेलू काम करती हैं बकरी बाँधने वाले स्थान के पश्चात् जोयन स्ट्वेन है। यह ट्रान्धजीम ज़िले के ओपेडल स्थान का घर है। इस भवन की बनावट ओस्टरडल और

गुड ब्रेन्डस्डल की भाँति है। और आगे चलने पर स्लिकले स्टाड फार्म यार्ड है। यह एक दो सुन्दर तल्ला भवन है। यह मकान ट्रान्धजेम ज़िले की बनावट का बना है।

होवडेहसेट आरलैण्डेट का है। इस भवन की बनावट ट्रान्धेज़ेम ज़िले के तटीय प्राचीन घरों सी है। यह भवन दो युगों में बना है। इसका रसोईघर तथा भट्ठी १७०० ई० में और नहाने धोने तथा सामान रखने के कमरे १८०० ई० में बने हैं। इस भवन के अन्दर जो चूल्हा है वह बिलेगेर कहलाता है। बिलेगेर गुम्बद की भांति होता है। यह सिमेन्ट का बना है। नार्वे के बनैले प्रदेशों में बिलेगेर का प्रयोग होता था।

इसके आगे चलने पर स्ट्रीन का एक घर मिलता है। यह नार्ड फिजोर्ड ज़िले का घर है। यहाँ पर एक भट्ठी है जो प्राचीन काल में पश्चिमी नार्वे में अधिक प्रयोग होती थी। इसको स्मोक स्टोव कहते हैं। भट्ठी और कमरे के बीच में एक दीवार है। इसी के समीप पश्चिमी नार्वे के और भी बहुत से घर हैं जो सत्रहवीं सदी के बने हुए हैं। उसके पश्चात् सनहोरलैण्ड के

मुनटीमनेस वाले चार घरों का संग्रह है। इनमें एक रहने का मकान, एक सोने की छत, एक सामान रखने का मकान और एक इलधूस है। मकान की छत १७६६ ई० में और सामान रखने वाला कमरा १७४३ ई० में बना था। यह पश्चिमी नार्वे के घरों के स्मारक हैं।

यहाँ से मार्ग बन में होता हुआ पहाड़ी पर रेस्टोरेन्ट को जाता है। यह रेस्टोरेन्ट बहुत ऊँचे स्थान पर है और वहाँ से नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। इसके कुछ आगे एग्रीकल्चरल म्यूज़ियम (कृषि अजायब घर) है। कृषि अजायब घर में कृषि करने के रंग बिरंगे औज़ार हैं। प्राचीन तथा आधुनिक समय के खेती करने के सामान तथा बीज सभी वहाँ पर रखे हैं।

उससे और ऊपर चलकर गोल एनशन्ट स्टाव चर्च (गोल प्राचीन स्टाव चर्च) तथा और दूसरे प्राचीन भवन हैं। यह चर्च अपने समय की कला का एक उदाहरण है। इसके आरम्भिक भाग बारहवीं सदी में बने थे। परन्तु समूचा चर्च बाद में बना था। चर्च के सामने लिस्लेहेएड का होवेस्टवेन है। यह १७३८ ई० का बना है। इसके भीतर का सामान देखने से प्रतीत

होता है कि यह टेलेमार्क के किसी प्राचीन धनी किसान का घर था।

इसके पश्चात् टेलेमार्क स्टाबूर (सामान रखने का स्थान) है। इसमें एक बन्द छज्जा है। चर्च के दूसरी ओर एक प्राचीन छत है। यह छत सोंड्रे फ्रान गुब्रान्ड-स्डल की है। पास ही एक कमरे वाला एक घर तथा बाल्ड्स का एक सामान रखने का स्थान है। यहाँ से मार्ग नीचे की ओर खुले हुए थियेटर को जाता है जहाँ पर ग्रीष्म काल में खेल तमाशा होता है।

थाउलो अजायबघर

यह पहले पहल सोग्ने के लीकांजेर स्थान पर १७५० ई० में एक स्वाँग घर बनाया गया था। १८०० ई० में उस काल की संस्कृत के अनुकूल होने के लिये इसे बदला गया था। अब वहाँ पर बहुत सी मूर्तियाँ और सामान हैं। किसी समय में यह थाउलो वंश के अधिकार में था और वहाँ पर मिस ऐमी, मिस क्रिश्चियाने और थाउलो के स्मारक थे। इसके व्यय के लिये कुछ धन पहले से ही दान कर दिया गया था। इसके सामने फ्रांसीसी ढंग

की एक वाटिका है। उसी के समीप एक छोटी वाटिका अँग्रेज़ी ढंग की है जो १८०० ई० में वहाँ जाने वाले अँग्रेज़ों की सूचक है। यहीं पर हेनरिक वर्जेलैंड का ग्रीष्म काल का घर है। यह दैम्स्ट्रेट, क्रिश्चियाना की वाटिका से लाया गया था।



अजायबघर का बगीचा

गेम्लेवेन और नास्र्क स्जाफार्ट्स अजायबघर

चर्च के पीछे के मकान गेम्बलेबी कहलाते हैं। अब इनकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी है। इनमें आर्टीजन्स हाउस (कारीगरों का घर) देखने योग्य है। यह पहले ओसलो

के थालबोड गेटेन १४ में था। अब हंगे का जेल भी तयार हो गया है। यह स्थान प्रजा के लिये खुला रहता है। अंतिम भवन को बार्थे गार्ड कहते हैं। यह कराजेरो (१७०० ई०) के संस्कृति की सूचक है। नीचे एक छोटे कमरे में एक दूकान थी उस दूकान का व्यापार एक छोटी खिड़की द्वारा होता था। बार्थे गार्डेन के ठीक दूसरी ओर डेट गेम्ले फाइनान्स डिपार्टमेन्ट (कोष सम्बन्धी भवन) अथवा जनरलिटेट्स गार्डेन है। १८०० ई० में यह भवन जनरलिटेट्स गार्डेन कहलाता था। यह पहले पहल १७१४ ई० में बना था। इसके कुछ कमरे आरम्भिक काल से ही अब तक बने हैं। शेष इसके चारों ओर नार्वे की जहाज़ी उन्नति के बताने वाले स्मारक हैं।

नार्वे

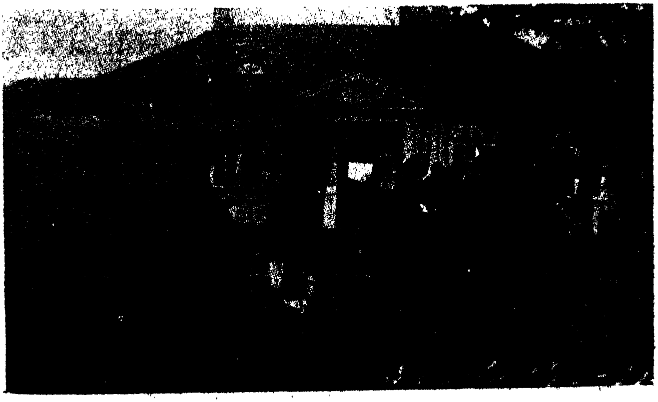
नार्वे में प्रकृति ने बड़ी सूमता का प्रदर्शन किया है परन्तु फिर भी नार्वे के निवासियों ने उसे ऐसा बना लिया है कि सारा संसार उसकी प्रशंसा करता है और नार्वे के लोगों को आदर की दृष्टि से देखता है। नार्वे के ३ प्रतिशत से कुछ ही अधिक भाग में खेती होती है। नार्वे में लोहे और कोयले की खानें साथ साथ नहीं पाई जातीं इसलिये वहाँ पर आधुनिक कारखानों की कमी है। नार्वे के निवासी चाहे जितना परिश्रम करें परन्तु वे नार्वे की भूमि से अपनी जीविका नहीं चला सकते। उन्हें भोजन की वस्तुएँ बाहर से मँगानी पड़ती हैं। वे अपने देश की बनी हुई वस्तुओं का परिवर्तन करके भी इँगलैण्ड आदि देशों की भांति गुजारा नहीं कर सकते।

नार्वे में साल में २०० दिनों तक वर्षा होती है। बर्गेन में साल में ६ फुट से अधिक वर्षा होती है।

नार्वे देश में एक बड़ा पठार है। यह पठार कड़ा और समुद्र तल से ऊँचा है। इस पठारी प्रदेश में लाभ दायक पौदों की उपज नहीं हो सकतो है। नार्वे और स्वीडन के मध्य में कोल नामक पर्वतीय दीवार सीमा

बनाती है। नार्वे का सबसे उत्तरी भाग आर्कटिक वृत में है।

नार्वे में आर्कटिक, अटलांटिक सागर और भीतरी नमकीन पानी की नहरें इस प्रकार फैली हुई हैं कि



नार्वे का सुन्दर दृश्य। यहीं एक नार्वेजियन मित्र ने लेखक का अचानक फोटोग्राफ ले लिया था।

मानों उसपर पानी के सोतों की झालर लगी है। भीतर की नमकीन नहरों को फजोर्ड कहते हैं। नार्वे की अधिकांश खेती इधर उधर कोनों में कहीं कहीं होती है। पर्वतों के आधारों पर नार्वे के छोटे छोटे खेत हैं। नार्वे

की कृषि भूमि का ६६ प्रतिशत भूमि ५ एकड़ भूमि से कम है और उसका ६८ प्रतिशत २५ एकड़ से कम है।

नार्वे को देखने से प्रतीत होता है कि उसे बनाने में प्रकृति ने बहुत बड़ी ऋतु सम्बन्धी त्रुटि कर डाली



नार्वे में अनाज और घास सुखाने का ढंग। ज़मीन गरमी की ऋतु में भी इतनी गीली रहती है कि उस पर सुखाया नहीं जा सकता।

है। वहां पर ग्रीष्म काल में बड़ी धूप होती है परन्तु जाड़े में बहुत कम धूप होती है। वहां पर बहुत अधिक बेकार पानी है तथा बहुत अधिक ऊसरी पर्वतीय प्रदेश है।

नार्वे की भूमि में जितनी अच्छाई की न्यूनता है

उतनी ही वहां के निवासियों में अच्छाई की अधिकता है। नार्वे के निवासी खुली वायु में जीवन व्यतीत करते हैं वे नागरिक जीवन की कठिनाइयों और दुखों को



हँसिया तेज़ करने का पत्थर

नहीं जानते हैं। उन्होंने अपने देश के भीतरी धन से सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना सीखा है। वे जहाजों

में बैठकर समुद्र में जाते हैं, अपने देश का भ्रमण करते हैं और जो वस्तु उन्हें समुद्र अथवा भूमि में मिलती है उससे लाभ उठाते हैं। उनके सामने पर्वतों का तथा हिमानी का सम्पूर्ण दृश्य होता है। वे अपने फजोर्डों की पंक्तियों में बादलों के झुंड तैरते हुये देखते हैं।

वे पुस्तकों द्वारा संसार का ज्ञान रखते हैं। डेनमार्क निवासी किताबों के कीड़े हैं और वे शिक्षा को बहुत पसंद करते हैं। नार्वे में अशिक्षित लोगों की संख्या बहुत है। नार्वे में उसकी शिक्षा तथा जनसंख्या की अपेक्षा अधिक टेलीफोन हैं। नार्वे के इबसेन्स और क्रीग्स को सारा संसार भक्ति तथा आदर की दृष्टि से देखता है। नार्वे में बहुत ज्यादा इबसेन्स और क्रीग्स ऐसे भी हैं जिनके नाम संसार को विदित नहीं हैं।

नार्वे का तट मछली के शिकार करने के लिये बड़ा ही उपयोगी है। यात्रियों को प्रसन्न रखने और लुभाने के लिये वहां के तटों का दृश्य भी बड़ा मनोहर है। नार्वे का तट बहुत कटा फटा है। उसकी समस्त लम्बाई १२ हज़ार मील है।

नार्वे के तट को अलास्का का दक्षिणी तट कहते

हैं। चतुर जहाज चलाने वाले बड़े बड़े जहाज नार्वे के फजोर्डों की सुन्दरता भयानक है और मनुष्य जाति के लिये बड़ी लाभदायक है। नार्वे के फजोर्डों को देख कर मनुष्य वहां पर अकेलेपन का भास नहीं करता वरन्



मछली मारने वालों का एक अड्डा

उसे उन्हें देख कर बड़ी प्रसन्नता होती है। फजोर्डों पर रहने वाले किसान स्थल के भीतर बन्द प्रधान जलमार्गों से मिले रहते हैं। नार्वे के मार्ग संसार के बड़े मार्गों में से हैं। यह मार्ग प्राचीन (वाइकिंग) समय से ही प्रयोग किये जा रहे हैं। नार्वे में कुहरा बहुत पड़ता है।

कुहरे के कारण वहां के मार्ग साफ सुरक्षित नहीं रहते हैं। उनमें यात्रा करना खतरे की बात है। कुहरे की भीषणता देख कर यह बात अनुमान करना कठिन हो जाता है कि क्या वहां बोट चल सकेंगे और जहाज २० हज़ार मील की यात्रा करके वापस हो सकेंगे?

अटलांटिक सागर की गल्फ स्ट्रीम गर्म धारा नार्वे की ऋतु को सुहावना बना देती है और वहां पर मछलियाँ भी बहुत मात्रा में हो जाती हैं। यदि वहां पर मछलियों की अधिकता अथवा गल्फस्ट्रीम के कारण गर्मी न हो जाती तो लोग भूकों मर जाते और वहाँ पर रहना कठिन हो जाता। परन्तु जीवन दायक गल्फस्ट्रीम सदैव वहां बहा करती है और उसमें किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती है।

नार्वे में ह्वेल मछली के शिकार करने का रोज़गार बहुत होता है। इसका व्यापार याँकी जहाजों द्वारा न्यूइँगलैण्ड के बन्दरगाहों से होता है। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरम्भ काल में पता चलता था कि ह्वेल मछली के रोज़गार का संसार में अंत होने वाला है। ह्वेल मछली अपने बचाव के लिये कोई प्रयत्न नहीं करती है। वे अपनी मृत्यु की घंटी स्वयम् बजा देती

हैं। यदि वे अब तक पानी के नीचे पड़ी रहतीं तो आज नार्वे निवासी अपने जहाजों और बन्दूकों द्वारा उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे।

ह्वेल मछलियों के पकड़ने के लिये जो आधुनिक नियम बनाया गया है उससे नार्वे वालों को अपने व्यापार में बहुत लाभ है। नार्वे के लोग ह्वेल मछली का शिकार हुकों द्वारा करते हैं। शिकार करने के पश्चात् यह तेल में डाल दी जाती हैं। इनका शिकार अधिकतर अंटार्क्टिक प्रान्त में होता है।

नार्वे के लोग ओडिन और थार देवताओं को मानते हैं। ओडिन उनका युद्ध देवता है। बलहल देवता को वे स्वर्ग का औतार मानते हैं।

नार्वे के निवासी बड़े उत्साही होते हैं। नैनसन नामक व्यक्ति ने उत्तर की ओर यात्रा की थी। वह जब साइबेरिया प्रान्त में पहुँचा तो उसका जहाज बरफ से जम गया। वह जहाज छोड़ पैदल उत्तर ध्रुव की ओर चलने लगा और उस उत्तरी अक्षांश तक पहुँचा जहाँ उस समय तक कोई न पहुँच सका था। जहाँ पर वह पहुँचा था वह स्थान उत्तरी ध्रुव से २६१ मील की दूरी

पर था। उसके पश्चात् एक दूसरा नार्वे निवासी जिसका नाम कैप्टन रोल्ड अमडसन था उसने ध्रुव प्रदेश का पता लगाने और भौगोलिक स्थिति नियत करने में



नार्वे का पहनावा

बड़ा काम किया। उसने उत्तरी-पश्चिमी मार्ग हो कर दक्षिणी ध्रुव का पता लगाया और वहां पर पहुँचा।

१९२६ ई० में वह अमरीकन लिंकनएल्स बर्थ के साथ स्पिटबर्जेन से वायुयान द्वारा ध्रुव प्रदेश को उड़ा और अलास्का में उतरा। उसके पश्चात् वह दुबारा उत्तरी ध्रुव की हिम में कहीं फँस गया वह संसार से सदैव के लिये अलग हो गया।

नार्वे के निवासियों ने संसार के सब से उत्तरी तथा दक्षिणी प्रदेश के पता लगाने में बहुत बड़ा हाथ बँटाया है। वे लोग इन्हीं प्रान्तों में काम करते हैं। १९३० ई० के शीत काल में १० हज़ार नार्वे निवासी अंटार्टिक प्रान्त में हिम की बड़ी दीवार के समीप काम कर रहे थे। ग्रीष्म काल में भी लगभग उतने ही लोग आर्किटक सागर में काम करते रहे। वे दिन-रात काम करते थे।

नार्वे की अनुपम जलवायु की जैसी अवस्था नार्वे में है वैसी संसार के और किसी देश की नहीं है। नार्वे की आइसोथरमल लाइन दक्षिण की ओर आकर आते आते पतली होकर समाप्त हो जाती है। नार्वे का हैमर फेस्ट नगर संसार का सबसे अधिक उत्तरी नगर है। वहां का जनवरी का तापक्रम जर्मनी के बर्लिन नगर

और रूमानिया के बुखारेस्ट नगर के लगभग समान रहता है। हैमरफेस्ट से बर्लिन १३०० मील तथा बुखारेस्ट १८१५ मील दक्षिण की ओर हैं। ओसलो नगर हैमर फेस्ट से ८३५ मील दक्षिण है परन्तु दोनों नगरों का



नार्वे की घोड़ागाड़ी। एक तरफ गोदामघर है।

जनवरी का ताप समान भाव से रहता है। यह समानता गर्म गल्फस्ट्रीम धारा के कारण है जो नार्वे के पश्चिम तट होकर जाती है।

नार्वे की अव्यवस्थित जलवायु का वहाँ के कृषि से बहुत बड़ा सम्बन्ध है। नार्वे में आर्कटिक प्रान्त के भीतर खेती करना निराश उद्योग करना नहीं है।

जैसे ही बरफ पिघलती है वैसेही वसंत काल की लम्बी तेज़ धूप में पेड़ पौदे तेज़ी के साथ उगते और बढ़ते हैं। आर्कटिक वृत्त के अन्दर दूध-मक्खन आदि का रोज़गार भी बहुत लाभदायक होता है, यद्यपि लोगों का विचार है कि वहाँ रेंडियर के सिवा दूसरे पशु जीवित नहीं रह सकते।

नार्वे गायों का देश कहा जा सकता है। योरुप में पशुओं की संख्या वहाँ की जन-संख्या का साढ़े पाँचवाँ भाग है। नार्वे में पशुओं की संख्या वहाँ की जन-संख्या का ढाई गुना है।

नार्वे के किसान पूर्वी योरुप के किसानों की भाँति गरीब नहीं हैं। नार्वे में बड़े बड़े ज़मींदार और ताल्लुकेदार नहीं हैं। वहाँ पर छोटे छोटे किसान हैं जिनके पास छोटे छोटे खेत हैं। वहाँ के किसान अपने खेतों स्वयं मालिक हैं।

बीसवीं सदी में नार्वे ने राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में अच्छी उन्नति की है। १३५७ ई० में कालमार की संधि के अनुसार स्कैंडीनैविया के तीनों देश एक सूत्र में बँध गये थे परन्तु १७ मई सन् १८१४ ई० को यह बँधन टूट गया जब कि नार्वे ने अपने यहाँ एक उदार विधान की घोषणा करके डेनमार्क से अलग हो

गया। स्वीडन के साथ उसका राजवंशज सम्बन्ध १६०५ ई० तक चलता रहा। परन्तु नार्वे में राजनैतिक उन्नति हो रही थी इसलिये वह स्वीडन के साथ भी न रह सका और १६०५ ई० में उसने डेनमार्क के प्रिंस चार्ल्स को हैकन सप्तम के नाम से अपने देश का राजा बनाया।

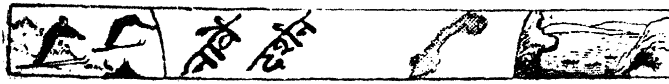
नार्वे की पार्लियामेन्ट को स्टोर्टिंग कहते हैं। वह राजा के प्रत्यादेश पर किसी बिल को पास कर सकती है। नार्वे का राजा केवल नाम मात्र है यह कहना अनुचित न होगा कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका का प्रेसीडेन्ट वहाँ का राजा नहीं वरन् शासक है। डेनमार्क का राजा वहाँ का राजा तो है परन्तु शासक नहीं है। स्विस लोगों की भांति डेनमार्क के लोग योरुप में सबसे अधिक प्रजातंत्रिक हैं। वे लोग पक्के स्वतंत्र हैं। जब उनके निजी अधिकार का प्रश्न होता है तो वे प्रत्येक निरर्थक कार्य करने के लिये तयार हो जाते हैं।

प्राचीन काल से ही नार्वे की सफलता और उन्नति वहां के समुद्र के कारण हुई है। २०वीं सदी के आरम्भ से वहां समुद्र की अपेक्षा भूमि कर से आय बहुत अधिक होने लगी है। परन्तु सचमुच यह आय पानी के शक्ति से ही प्राप्त होती है।

देश दर्शन

पिछले १५ या बीस वर्षों में पानी ने नार्वे की उन्नति में एक प्रधान भाग लिया है। इटली में अल्पाइन प्रपात जो सुविधा तथा लाभ इटली को प्रदान करते हैं वही बातें नार्वे को उनके प्रपातों से प्राप्त हैं। इटली और नार्वे दोनों देशों में कोयले की कमी है। कोयले की कमी की पूर्ति दोनों देशों में प्रपातों से शक्ति (बिजली) पैदा करके की जाती है।

मनुष्य ने अपनी बुद्धि से पानी की शक्ति को गर्मी प्रकाश, बालू आदि में बदल दिया है। आज यही शक्ति (बिजली) तारों द्वारा दूर दूर स्थानों पर ले जाई जाती है और उससे कारखानों की बड़ी बड़ी मशीनें चलाई जाती हैं। कमरों में प्रकाश इसी शक्ति द्वारा किया जाता है। नार्वे में प्रत्येक २४ घंटे के लिये १५०,०००,०० हार्स पावर की बिजली तयार हो सकती है जिसमें से केवल १७ लाख ५० हज़ार हार्स पावर की बिजली अब तक तयार की जा सकी है। अब नार्वे के ग़रीब किसान आधुनिक कारखानों के व्यवसायों की ओर झुकने लगे हैं। आशा की जाती है कि वे कुछ वर्षों में संसार के उच्च देशों की भाँति उन्नति कर जायेंगे।



लैप जाति

लैप जाति उत्तरी स्कैंडीनैविया के सुदूर पर्वतों और नदियों के बीच आर्कटिक वृत्त के ऊपर कंजरों की एक रहस्य पूर्ण जाति रहती है जिसे लैप कहते हैं। यह जाति कहाँ से आई और इसके सृष्टि कर्ता कौन थे यह बात तर्कनीय है।

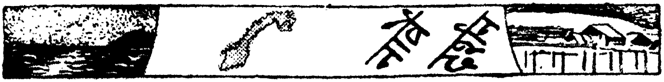
यह लोग कद के बड़े नाटे होते हैं, परन्तु बड़े साहसी और सहनशील होते हैं। यह छोटे लोग सदैव घूमते फिरते रहते हैं। वे लोग बर्फीले तूफानों आर्कटिक प्रान्त लम्बाकार पर्वतीय घाटों और बर्फीली नदियों के बीच प्रत्येक वर्ष अपने रेंडियरों के पीछे पीछे घूमते फिरते रहते हैं।

लैप प्रान्त में हमें सभी बातें अपनी विपरीत दशा में मिलती हैं। वहां पर मनुष्य के जीवन पर पशु का शासन है। रेंडियर लैप लोगों के जीवन का आधार है। चाहे हरियाली का स्थान हो और चाहे उजाड़ बंजर हो, रेंडियर एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं टिकता है। इसी कारण बहुत ही कम लैप लोग अपना स्थाई स्थान बनाते हैं वे अपना नगर नहीं बसाते हैं।

वे लोग अपने पूर्वजों की भांति अब भी प्राचीन ढंग से असत्कारी आर्कटिक प्रदेश में रहते हैं। लैप लोगों के जीवन को देखना और उसका अध्ययन करना बड़े साहस और आनन्द की बात है।

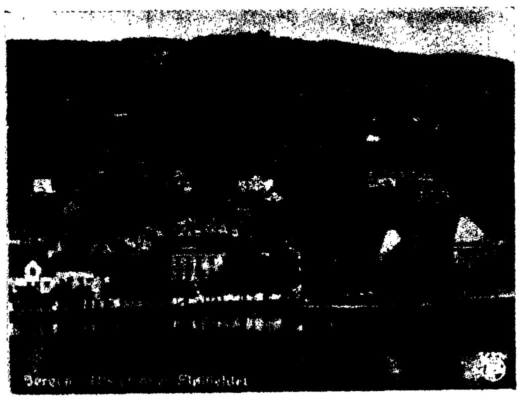
लैप लोगों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। १—वह लैप केवल मछली पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। (२) पर्वतीय लैप जो रेंडियर संस्कृत के मानने वाले हैं। (३) वह लैप जो बनों में घर बना कर अपने रेंडियरों के साथ रहते हैं। लैप लोग अपने रंग, रूप और टोपी द्वारा पहचाने जाते हैं। स्त्रियों की टोपी मर्दों से भिन्न होती है।

लैप लोग अपने अग्नि स्थान के पिछले भाग में किसी को नहीं जाने देते हैं। वे प्राचीन काल से ही उसे पवित्र मानते चले आये हैं। वह उनके भोजन रखने का स्थान होता है।



बर्गेन नगर

बर्गेन नार्वे का दूसरा बड़ा नगर है। यह पश्चिमी नार्वे के व्यापार का प्रधान केन्द्र है। इस नगर की नींव १०७० ई० में राजा ओलाव कइरे ने डाली थी। इस नगर ने नार्वे के इतिहास में एक बड़ा भाग लिया है।



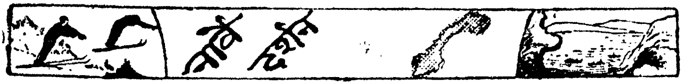
बर्गेन

बर्गेन एक बड़ा समुद्री जहाज़ों का अड्डा है। प्राचीन काल में यह मछली के व्यापार का उत्तरी प्रधान केन्द्र था। बर्गेन चारों ओर पर्वतों से घिरा है। इसके घेरे में बहुत से सुन्दर दृश्य हैं। वहाँ के यात्रियों को चाहिये कि वे फ़्लोईन पर्वत का भ्रमण अवश्य करें क्योंकि वहाँ से

बर्गेन नगर और उसकी सीमा के सुन्दर दृश्यों का अवलोकन होता है। बर्गेन नार्वे के यात्रियों का केन्द्र है।



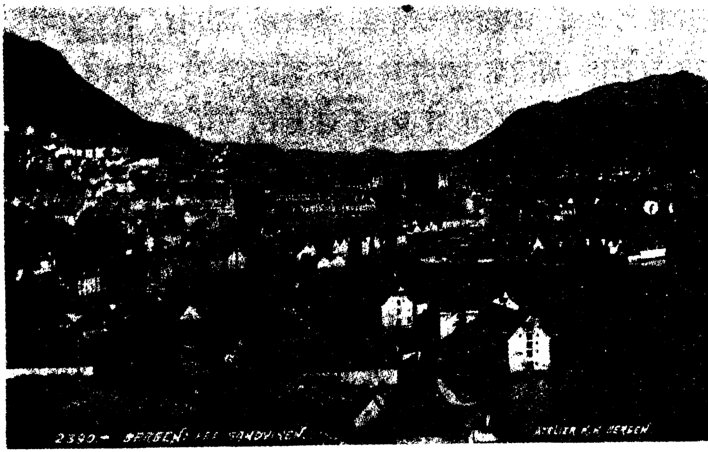
बर्गेन के पहाड़ी ट्रैम-लाइन के ऊपरी भाग पर लेखक को कुछ समय बिताने का सौभाग्य मिला था। इसी बीच में कांडक्टर (संचालक) ने लेखक का फोटोग्राफ लिया था। यहाँ से बर्गेन का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम पड़ता है।



बर्गेन नगर तीन ओर पर्वतों से घिरा है। पश्चिम की ओर खुला है और उसी ओर समुद्र है। बर्गेन के लोग वाइकिंग्स के समय से ही अच्छे मल्लाह होते चले आये हैं। उनके लिये इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड, जर्मनी और हालैण्ड पहुंचना योरुप के भीतरी राष्ट्रों के अनुसार सुगम है। वे लण्डन अथवा हैम्बर्ग अपनी राजधानी की अपेक्षा अधिक सुगमता और शीघ्रता से पहुँचते हैं। संसार के भिन्न देशों से बहुत से लोग बर्गेन आये और वहीं आकर वे वहाँ के नागरिक बन गये। इसी कारण यह नगर विदेशी सा प्रतीत होता है। बर्गेन के निवासी जो सामुद्रिक जीवन पसंद करते थे उन्होंने समुद्र ही को अपने जीवन का आधार बनाया। इसी कारण नार्वे के निवासी बर्गेन के निवासियों से ईर्षा करने लगे। बर्गेन के निवासी व्यापारिक रूप में स्वतंत्र हो गये हैं और उन्होंने अपनी स्थानीय संस्कृत बना लिया है। बर्गेन के लोग इसी कारण कुछ घमंडी भी बन गये हैं। वहाँ की सभ्यता नार्वे निवासियों से अलग है। प्रकृति ने बर्गेन को सुन्दर स्थान तथा अलौकिक सीमा देकर सुशोभित किया है। वहाँ के नागरिकों ने ६०० साल के भीतर नगर को बड़ा ही सुन्दर बना लिया और उन्हें अपने

नगर से गूढ़ प्रेम हो गया है।

बर्गेन नगर की जन-संख्या लगभग एक लाख है। यह नार्वे साम्राज्य का दूसरा बड़ा नगर है। यह एक व्यापारिक तथा जहाज़ चलाने वाला नगर है। नगर में वहाँ की सभ्यता की बहुत सी वस्तुएँ देखने योग्य हैं।



बर्गेन-बन्दरगाह और नगर का एक दृश्य

यदि हम बर्गेन नगर का एक बार चक्कर लगावें तो हमें वहाँ के प्राचीन चर्च, भवन, अजायबघर और नगर की दूसरी वस्तुएँ वहां का हज़ारों वर्ष का इतिहास बतावेंगे। इस नगर से यात्री बहुत कुछ सीख सकता है।

यह एक बड़ा ही नगर है। यहीं पर लूडविंग होलबर्ग नामक कवि को २५० वर्ष पहले प्रकाश प्राप्त हुआ था इस नगर में आई० सी० डाह्ल पैदा हुआ था। वह नार्वे की आधुनिक चित्र-कला का पैदा करने वाला था। बर्गेन से ही ओले बुल संसार की विजय करने के हेतु



बर्गेन-बन्दरगाह का एक दृश्य

निकला था। एडवर्ड ग्रीग इसी नगर का रहने वाला था। उसने अपने अधिकांश गाने इसी नगर में लिखे थे जो आज संसार की सम्पत्ति बने हैं। यह एक अन्त-र्राष्ट्रीय नगर है। यहाँ का व्यापार हजारों वर्ष तक हेन्सेस के हाथ में था। यह नगर सबसे अधिक राष्ट्रीय है।

यहाँ पर नार्वे का प्रथम थियेटर २ जनवरी सन् १८५० ई० को खोला गया था। यहीं पर नार्वे की प्रथम व्यापारिक अकेडेमी बनाई गई थी।

बर्गेन नगर सुन्दरता की खान है। इसके भीतर बहुत सी वस्तुएँ एक दूसरे के प्रतिकूल हैं। यह नगर रीति-रिवाजों और अचम्भा वाली वस्तुओं से भरा हुआ है। इस नगर का भ्रमण जो एक बार कर लेता है उसके ऊपर इस नगर की प्राचीन संस्कृति का गहरा रंग चढ़ जाता है।

इस नगर की नींव १०७० ई० में ओलावकेरे राजा ने डाली थी। सुन्दर तट होने के कारण यह थोड़े समय में ही एक सुन्दर प्रधान हार्बर बन गया। इस नगर का जीवन जहाज़ चलाने और व्यापार करने पर निर्भर है। मध्य-कालीन समय में यह उत्तर का सबसे बड़ा नगर और सबसे बड़ा तथा आवश्यकीय व्यापारिक केन्द्र था। यह नगर अपने पड़ोसियों के ऊपर निर्भर करता है जिनके बीच में उसने उन्नति की है। बर्गेन नगर अपने हार्बर द्वारा ही पहचाना जा सकता है।

बर्गेन नगर ७ पर्वतों से घिरा है। यहाँ पर बर्गेन-

हस का किला और हाकून्स हालेन का बड़ा जेवनार गृह है। यह जेवनार गृह बारहवीं सदी का बना हुआ है। कुछ साल हुये कि जरेहार्ड मुंथे कलाकार ने अपनी चित्रकारी से इसे सजा दिया है। यहाँ पर रोज़ेन काँज़ टावर है इसे पन्द्रहवीं सदी में हैंसियाटिक लोगों से इस

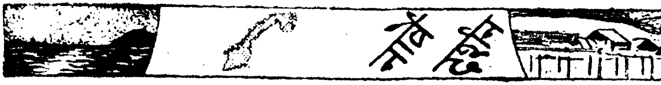


बर्गेन का एक दृश्य

नगर की रक्षा करने के लिये बनाया गया था। नगर की ओर जाते हुये मैरिया किरकेन का चर्च मिलता है। यह चर्च ग्यारहवीं सदी का बना हुआ है। हैंसियाटिक अजायबघर में व्यापारियों के रहने के लिये एक अजीब स्थान बना है जो प्राचीन संस्कृति का एक अद्भुत उदा-

हरण है। मछली बाज़ार से बाईं ओर लडविग होलबर्ग की मूर्ति है उसके पश्चात् नगर का प्रधान भाग आ जाता है। नगर के मध्यवर्ती भाग में सुन्दर दुकानें और बाज़ार हैं। नगर के भवनों की बनावट सीधी-सादी है। मध्यवर्ती भाग में टोरवालमेनिंग का बाज़ार है। यहीं पर बर्गन का एक्सचेंज़ स्थान है। इसे प्रोफेसर रिओल्ड ने अपनी चित्रकारी से सजाया है।

अब से २० साल पहले बर्गन में प्रवेश करने का मार्ग समुद्र होकर था परन्तु १६०६ ई० में बर्गन रेलवे खोली गई। यह रेलवे बर्गन और ओसलो के बीच बनाई गई है। यह सुन्दर स्थानों को पार करती है। स्टेशन पर उतरने के पश्चात् कैगटन होते हुये लिल्ले लुँगेगार्डस्वान (बड़ा पार्क) में लोग पहुँचते हैं। पार्क के अन्दर एडवर्ड ग्रीग की मूर्ति है। इसको पार करने के पश्चात् ओलो बुल की मूर्ति मिलती है। उसके बाद टोरवालमेनिंग में लोग प्रवेश करते हैं। इस स्थान से एनगेन को मार्ग जाता है। इस स्थान पर डेन नैशनल सीन्स नामक थियेटर है इसका भवन बड़ा सुन्दर है। उसके आगे बर्गेन थियेटर का अजायबघर है। यह डेनमार्क



में अपने रंग का एक ही है। बाईं ओर रासमूस मेयर का संग्रह घर तथा डेन परमामेन्ट का प्रदर्शन गृह है। प्रदर्शन गृह में चांदी और दूसरी धातुओं की बनी हुई बहुत सी घरेलू वस्तुएँ, प्राचीन चीनी कला का कारखाना, बर्गेन पिक्चर गैलरी और बर्गेन के मछली मारने का अजायबघर है। रेलवे स्टेशन के समीप ही पब्लिक लाइब्रेरी (जनता के लिये पुस्तकालय) है।

टोरवालमेनिंग को आधार मानते हुये यात्री बर्गेन नगर और उसके कई ज़िलों का अध्ययन कर सकता है। उत्तर की ओर स्ट्रैन्डगेटन, प्राचीन मुखेलिंग, नारडेन्स और नार्डेन्स पार्क हैं। सैन्ड विकेन के पूर्व सुन्दर जहाज़ों के घाट, सड़कें, साम्राज्य कालीन भवन और प्राचीन काल के निवास स्थाम हैं। नगर के आधुनिक भाग के पश्चिम और दक्षिण की ओर पहाड़ी के ऊपर बर्गेन अजायबघर है। इसमें इतिहास की वस्तुओं का एक बड़ा संग्रह है। उसी में बर्गेन का मैरी टाइम अजायब-घर है जिसमें प्राकृतिक ऐतिहासिक संग्रह है। निगार्डस पार्क के अन्त में फीज़ियो ग्राफिकल इन्स्टीट्यूट है। दक्षिण-पूर्व की ओर कोर्सकिर्केन और डोमकिर्केन के चर्च हैं। राधूस का टाऊन हाल और सेंट जार्जेस स्पताल

भी देखने योग्य हैं। स्पताल के पीछे की ओर एक प्राचीन लकड़ी का बना हुआ चर्च और कई एक लकड़ी के बने हुये घर हैं।

टोरवालमेनिंग के समीप ही नगर के उच्च श्रेणी वाले होटल और रेस्टारेन्ट हैं। मछली बाज़ार के समीप वेट्रलिडसालमेनिंग से रेलवे द्वारा फ्लोईन को लोग जाते हैं। फ्लोईन में नगर का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है।

बर्गेन से नार्वे के और दूसरे देखने योग्य स्थानों को जाने के लिये सुगम मार्ग हैं। बर्जेन ओसलो रेलवे समस्त नार्वे देश को पार करती हुई ओसलो राजधानी को पहुँचती है। बर्गेन के बन्दरगाह से सुन्दर पैसेञ्जर जहाज अमरीका, इँगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, हालैंड, बेल्जियम, डेनमार्क, आइसलैंड, नार्थकेप और स्वाल्बार्ड को सदैव जाते आते रहते हैं।

बर्गेन के अजायब घर और कला संग्रह के स्थान

बर्गेन अजायबघर में प्राचीन ऐतिहासिक संग्रह है। यह एक प्राचीन भवन में स्थित है। यह अजायब घर सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को ग्यारह बजे दिन से २ बजे तक खुलता है। रविवार को भी ११ बजे से २ बजे तक दिन में खुला रहता है। रविवार को किसी प्रकार की फीस देखने के लिये नहीं लगती। शेष दिनों में फीस देनी पड़ती है नये भवन में ऐतिहासिक संस्कृति का संग्रह है। यह अजायब घर मंगलवार, गुरुवार, शनिवार और रविवार को ११ बजे से २ बजे तक खुला रहता है। रविवार को फीस नहीं लगती।।

बर्गेन मैरीटाइम म्यूज़ियम नये भवन में है। यह भी ऐतिहासिक संस्कृति अजायब घर के समय में खुला रहता है।

वेस्टलैण्ड का कुन्सइन्डस्ट्री म्यूज़ियम (पश्चिमी तट कला तथा रोज़गार का अजायब घर) सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को ११ बजे से ४ बजे तक खुला

रहता है। रविवार को ११ बजे से २ बजे तक खुलता है। रविवार को फीस नहीं लगती है।

बर्गेन पिक्चर गैलरी (बर्गेन की तस्वीरों का अजायब घर) यह दैनिक ११ से ४ बजे तक खुलता है। रविवार को ११ से २ तक खुलता है और मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को फीस लगती है।

बर्गेन फिशरी म्यूज़ियम (बर्गेन के मछली मारने का अजायबघर) यह रोज़ ११ बजे से २ बजे तक खुला रहता है। यहां पर किसी प्रकार की फीस नहीं लगती है।

रसमूस मेयर्स कलेक्शन (रसमूस मेअर का संग्रह घर) रविवार को ११ से २ तक शेष दिनों में ११ से ४ बजे तक खुलता है। मंगलवार, बृहस्पतिवार और शनिवार को फीस लगती है।

हैन्शियाटिक म्यूज़ियम रोज़ाना १० बजे से ६ बजे शाम तक खुला रहता है।

बर्गेन थियेट्रिकल म्यूजियम—यह बुधवार

और रविवार को ११ बजे दिन से २ बजे तक खुलता है।

हैकोनशालेन—का अजायबघर रोज़ ११ बजे से १ बजे तक खुला रहता है। रविवार को फीस नहीं लगती।

बोर शालेन—(परिवर्तन) रोज़ दोपहर से २ बजे तक खुलता है। यहां पर प्रोफेसर एक्सेल रिआेल्ड की सजावट है।

गैमले हाजेन फ्जोसअेर—गत प्रधान मन्त्री कृश्चियनमचेल्सेन का निवास स्थान था। इसको प्रधान मन्त्री ने नार्वे राज्य को दे दिया था। अब यह नार्वे राज्य की सम्पत्ति हो गई है। यह अब राजा के रहने का भवन बन गया है। रविवार, गुरुवार और शनिवार को ११ बजे से २ बजे तक खुला रहता है। यहां के पार्क और वाटिकाएँ रोज़ ८ बजे सवेरे से ८ बजे संध्या तक खुले रहते हैं। पार्क और वाटिकाओं में घूमने के लिये कोई फीस नहीं लगती है।

ट्राल्धौजेन होप—यह एडवर्ड ग्रीग का निवास स्थान था। ग्रीग्स म्यूज़ियम, गैमलेहाजेन के समयानुसार खुला रहता है। जुलाई और अगस्त के महीने में रोज़ खुला रहता है।

फैन्टोफ्ट स्टावक्रुके (स्टाव क्रुक) फैन्टोफ्ट ब्रिकेलुएड के समीप है। यह स्थान स्थानीय अफसर की आज्ञा द्वारा देखा जा सकता है।

बर्गेन नगर के थियेटर, वादित्रस्थल और सिनेमा

डेन नैशनल सीन—(१८५० ई० में खुला), एनगेन सितम्बर से मई तक रोज़ाना ८ बजे संध्या को नाच, गान और तमाशा होता है। जून से अगस्त तक ग्रीष्म काल मनाया जाता है।

आरचेस्ट्रल कम्पनी और बर्गेन नगर की भूमि—इसका काम अक्तूबर से मई तक होता है। रविवार, सोमवार और बृहस्पतिवार को नाच-गान होता है।

न्यूपेन्सगेट, सिनेमाटोग्राफ, लोजेन सिनेमाटोग्राफ, नाच-गान का बड़ा कमरा, ओल बुलमास, डेट गमले थियेटर एनगेन, एल्डोरैडो, ओलाव की रेस द्वार आदि स्थानों पर रोज़ाना तमाशा होता है।

देश दर्शन

बर्गेन रेलवे

बर्गेन रेलवे एक संसार प्रसिद्ध रेलवे लाइन है। यह योरुप की सबसे अच्छी और आनन्ददायक पर्वतीय रेलवे है। इस रेलवे लाइन की बनावट इंजीनियरिंग कला की अत्युत्तम कृत्य है। यह फ्जोर्ड और बर्गेन से आरम्भ होती है और सुन्दर घाटियों, पर्वतों, बर्फीले मैदानों और हरे भरे खेतों को पार करती हुई पूर्व की ओर फिर फ्जोर्ड में पहुँचती है और वहां से फिर ओसलो को जाती है।

बर्गेन रेलवे ३०६ मील लम्बी है। यह १६०६ ई० में बनकर तयार हुई है। यह रेलवे ओसलो राजधानी को बर्गेन से मिलाती थी। ओसलो नार्वे की राजधानी, सबसे बड़ा नगर और सबसे बड़ा बन्दरगाह है। बर्गेन दूसरे नम्बर का बड़ा नगर तथा बन्दरगाह है। ओसलो से बर्गेन तक को यात्रा लगभग १३ घंटे में समाप्त होती है। इस लाइन का दृश्य जाड़े और गर्मी दोनों ऋतुओं में बड़ा रंगीला, सुहावना और आनन्द दायक होता है। अधिकांश दृष्य जंगली हैं।

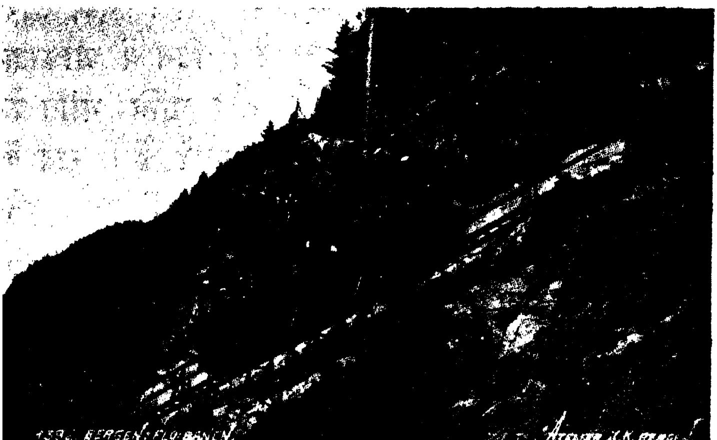
यहां के ग्रीष्म काल के दिन बड़े और गर्म होते हैं और रात उज्वल होती है। दिन में सूर्य का प्रकाश पर्वतों पर शोभायमान होता है, संध्या के समय पर्वतों की छटा सूर्य के स्वर्ण प्रकाश में और अधिक मनोहर हो जाती है। गर्मी में यहां पर आनन्ददायक पशु, जंगली जानवर, प्रपात, विशाल पर्वत और सदैव रहने वाली हिमानी आदि का अवलोकन होता है।

शीत काल में पर्वतों और घाटियों में बरफ बड़ी ही उज्वल रहती है। उज्वल बरफ़ पर आंखें नहीं ठहर सकतीं और चकाचौंध हो जाती हैं। दिन में आकाश सूर्य-प्रकाश से चमकता रहता है और भांति भांति के चमकदार रंग आकाश में दिखाई पड़ते हैं। रात में आकाश में अगणित संख्या में तारागण दिखाई पड़ते हैं। आकाश का रंग गहरा नीला रहता है और उसमें तारागणों तथा उत्तरी-प्रकाश की रोशनी रहती है। चन्द्रमा के तेज़ प्रकाश में नार्वे के पर्वत परियों के देश बन जाते हैं।

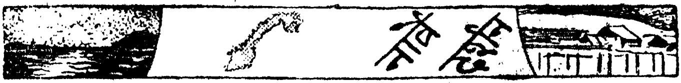
नार्वे के विशाल पर्वत बड़े भयानक हैं। शीतकाल में पर्वतों के ऊपर रेलवे को बरफ़ से खासा युद्ध करना



बर्गेन-पहाड़ी ट्रैमलाइन स्टेशन



बर्गेन की पहाड़ी ट्रैमगाड़ी संसार की एक अद्भुत वस्तु है। गाड़ियाँ फौलादी रस्सों से सधी रहती है। एक गाड़ी ऊपर चढ़ती है। ठीक उसी समय दूसरी गाड़ी नीचे उतरती है।



पड़ता है। शक्तिशाली घूमने वाले दल रेल के लिये मार्ग को साफ करते हैं। रेल के भीतर अथवा रेस्टारेन्ट कार के भीतर बैठे हुये यात्रियों को यह ज्ञान नहीं होता है कि रेल चलाने वालों को प्रकृति से कितना बड़ा युद्ध करना पड़ता है। वे लोग अपने कमरों में सुरक्षित और उष्ण रहते हैं। उन्हें शीत का आभास ही नहीं रहता है। शीतकाल में मार्ग में रेल को बरफ़ तथा तूफान का सामना करना पड़ता है।

बर्गेन रेलवे में नार्वे की और दूसरी लाइनों की भांति सब प्रकार की आवश्यक वस्तुएँ बर्तमान हैं। यह योरुप की सर्वोत्तम रेलवे लाइन पर रातों-दिन एक्सप्रेस गाड़ियां स्वीडन और योरुप के दूसरे भागों में चला करती हैं। दिन में रेल के अन्दर द्वितीय तथा तृतीय दर्जे और रेस्टारेंट कार रहते हैं। रात को रेल के अन्दर प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी और तीसरे दर्जे की विश्राम गाड़ियां चला करती हैं। गत महायुद्ध के समय पश्चिमी तथा पूर्वी योरुप के बीच आने जाने के लिये केवल बर्गेन रेलवे और बर्गेन-न्यूकैसिल स्टीमशिप लाइन का मार्ग खुला था।

बर्गेन रेलवे के स्टेशन

बर्गेन—यह नगर १०७० ई० में स्थापित किया गया था। यह एक बड़ा बन्दरगाह और यात्रियों का प्रधान केन्द्र है। जन-संख्या लगभग एक लाख है।

फजोंसगेर—स्टेशन यहां गैमलेहागेन, प्रसिद्ध भूत पूर्व राजनीतिज्ञ मिचेल्सन के रहने का स्थान था। अब यह भवन नार्वे की जनता का हो गया है।

कारनेस—यहाँ बर्गेन रेलवे लाइन सोर फ़जोर्ड के पास होकर गई है। यह फ़जोर्ड काफी गहरा है और नार्वे देश में भीतर की ओर दूर तक चला गया है।

टेंगरीड—स्टेशन सोर फजोर्ड पर स्थित है। यहां से नार हीमसंड को बराबर मोटर सर्विस लगी रहती है। नार हीमसंड हारडँगेर फ़जोर्ड पर स्थित है।

वाक्सडल—वाक्सडल मिल स्टेशन के समीप ही स्थित है। मिल तक बड़े से बड़ा स्टीमर आ सकता है। सोर फ़जोर्ड काफी गहरा है और कहीं कहीं पर उत्तरी सागर से अधिक गहरा है।

बोल्स्टा डोयरी—यहां पर समुद्र का अंत हो जाता है। बोल्स्टाफ़जोर्ड सोरफजोर्ड का एक भाग है।

ओस—यह समुद्र तल से १८७ फुट ऊँचा है। यह बर्गेन से ६७ मील की दूरी पर है, यह एक छोटा सा गाँव है। यहाँ पर सुन्दर गलियाँ, दुकानें और होटल हैं। सोन और हार्डनगेर को मोटर द्वारा जाने वाले यात्रियों का यह प्रधान अड्डा है। यहाँ से स्टालहीम गुडवानगेम, ईडे और यूलविक को बराबर मोटर चला करते हैं।

अपसेटे—यहाँ से चलते ही रेलगाड़ी ग्रावाहाल्सेन सुरंग में प्रवेश करती है। यह सुरंग १७४१२ फुट लम्बी है।

मीरडल—स्टेशन यह समुद्र तल से २८४३ फुट ऊँचा है। यह बर्गेन से ६८ मील की दूरी पर स्थित है। यह स्टेशन दो ऊँचे पर्वतों के बीच एक सकरी घाटी में स्थित है। इस स्टेशन के बाद फ़्लेम्स्डेल की सुन्दर घाटी का दृश्य देखते ही बनता है। रेलवे लाइन पर्वतीय दीवार में चिपटी हुई गई है और घाटी से १६३६ फुट ऊँची है। रेलगाड़ी से नीचे का दृश्य बड़ा ही सुन्दर लगता है। सोनेफजोर्ड को जाने वाली सड़क इसी गहरी घाटी में होकर जाती है। यह सड़क घाटी में २१ बार

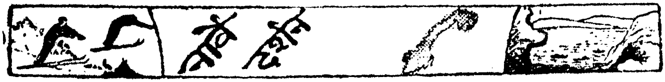
घुमावदार चक्कर बनाती नीचे उतरती है। पर्वत के ऊपर जोसफास प्रपात के समीप वरनहलसेन होटल स्थित है।

फ़्लेम्सडेल के नीचे का दृश्य वर्गन रेलवे में बड़ा ही मनोहर है। नीचे की ओर सुन्दर हरियाली है। विशाल ऊँचे बर्फीले पर्वतों के बीच बीच में प्रपात हैं। यहां का दृश्य प्रत्येक यात्री का हृदय हर लेता है। हालिंग्स्कीड फिंसे स्टेशन के मध्य में टौगेवान झील है। यह झील समुद्र तल से ४२६५ फुट ऊँची है। यह स्थान रेलवे लाइन का सबसे ऊँचा है।

फिंसे—का स्टेशन बर्जेन रेलवे लाइन में सबसे अधिक ऊँचा (४००७ फुट) है। यहाँ पर बहुत कम पेड़-पौदे हैं। चारों ओर पर्वतों पर बरफ जमी रहती है। रेलवे लाइन, रेलवे दुकानें, फिन्से स्टेशन और होटल के अतरिक्त यहाँ पर कुछ भी नहीं है।

फिन्से दारडँगेर हिमानी के नीचे स्थित है। यह हिम का एक सुन्दर गुम्बद है।

हावगस्टोल—(३२३६ फुट) समुद्रतल से ऊँचा



यहां पर हालिंग्स्कार्व पर्वतीय श्रेणी पर ऊँचे खम्भे बने हैं।

उस्टावसेड—स्टेशन उस्टावटन झील पर है। यहां पर नगर के रहने वालों के कैबिन (छोटे कमरे) बने हैं। शीत तथा ग्रीष्म काल की छुट्टियों में वह कमरे भरे रहते हैं।

गीलो—(२६०३ फुट की ऊँचाई पर) यहां से बन प्रदेश का आरम्भ होता है। कहीं कहीं छोटे छोटे खेत दिखाई पड़ते हैं। गीलो ग्रीष्म तथा शीत काल के घूमने का स्थान है। यहां पर बहुत से होटल हालिंगडल में हैं। हालिंगडल में बहुत सी प्राचीन वस्तुएँ हैं और प्राचीन रीति-रिवाज प्रचलित हैं। यहां पर नार्वे का राष्ट्रीय पहनावा का प्रयोग होता है। गोल भी अपनी प्राचीन देहाती संस्कृत के लिये प्रसिद्ध है। नेसवेन हालिंगडल की देहाती राजधानी है।

गल्सविक—क्रोडेरेन झील का दृश्य यहां देखने योग्य है। रेलवे लाइन ओजेनवीका स्टेशन तक झील

के किनारे किनारे जाती है। रेलवे लाइन ७५२० फुट लम्बी हैवस्टिंग सुरंग के भीतर होकर जाती है।

होनेफोस—यहां की जन-संख्या ३२०० है। इस नगर का नाम होनेफोस प्रपात के नाम पर पड़ा है। होनेफोस प्रपात स्टेशन के समीप ही है। रेल से प्रपात दिखाई नहीं पड़ता है परन्तु प्रपात को जाता हुआ ढाल दिखाई पड़ता है। यहां पर एक बेगना नामक पत्थर का पुल है।

रोआ—वाल्ड्रेस को जाने वाली गाड़ियों का जंकशन है।

ओसलो—ओसलो की जन-संख्या २ लाख ५० हज़ार है। ओसलो की स्थिति बड़ी अच्छी है। वहां पर फ़जोर्ड भी हैं। वहाँ के निवासियों को सुन्दर स्वच्छ वायु सेवन करने के लिये प्राप्त है।

रेन्डियरों का एकत्रित करना

लैप लोग एक ही डेरे में सपरिवार रहते हैं। वे रेंडियर की खाल का वस्त्र प्रयोग करते हैं। वे बर्च की लकड़ी जलाते हैं। बर्च की लकड़ी बहुत जल्द प्रज्वलित होती है। लैप स्त्रियां बड़े सवेरे उठते ही क़हवा बनाती हैं और अपने परिवार को जल-पान के लिये देती हैं। लैप लोग बड़े अतिथि सत्कारी होते हैं। वे मेहमान का बड़ा आदर करते हैं।

नार्वे की झीलों का दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। लम्बी चौड़ी झीलों में शान्ति का राज्य होता है। वे झीलें जादू की झीलें प्रतीत होती हैं। झीलों को पार करने के हेतु एक नौका बंधी रहती है। पार करने वाले उस पर बैठ कर झील को पार करते हैं और दूसरे तट पर जाकर दूसरी नौका को लेकर फिर वापस आते हैं और पहली नौका को फिर उसी स्थान पर बांध कर दूसरे तट से लाई हुई नौका पर पार जाते हैं इस प्रकार नार्वे के लोग अपने पीछे आने वालों के लिये सदैव तट पर एक नौका रखते हैं।

शीत काल और बसंत ऋतु में जब लैप लोग इधर

उधर घूमते हैं तो रेंडियर घूमने की दशा में भूल भटक जाते हैं। कभी कभी तो रेंडियरों का समूह का समूह गायब हो जाता है और कभी कभी रेंडियरों के बच्चे अथवा कुछ रेंडियर अपने बच्चों के साथ ला पता हो जाते हैं। मादा रेंडियर अपने बच्चों की अधिक परवाह नहीं करती और शीघ्र ही पैदा किये बच्चे को छोड़ कर चली जाती है। यद्यपि इस प्रकार के छोड़े हुये बच्चे १५ दिन के भीतर ही जंगलों में घूम फिर कर चरने के योग्य हो जाते हैं तो भी वे उन बच्चों की भांति शक्ति-शाली नहीं होते जो अपनी मां का दूध पीते हैं। छूटे हुये बच्चे दूसरी रेंडियर माँ से भी प्रेम करने लगते हैं और उसी का दूध पीते हैं।

जब तक बरफ जमी रहती है। तूफान आते रहते हैं और मौसम साफ नहीं होता तब तक रेंडियर ढूँढ़े नहीं जाते हैं। इन ऋतुओं में जो रेंडियर मार्ग में पड़ते हैं वे किसी भी समूह में सम्मिलित कर लिये जाते हैं। गर्मी की ऋतु आने पर प्रत्येक लैप परिवार का सरदार अपने रेंडियरों को दुसरे समूहों से अलग करने का प्रयत्न करता है। इस कार्य के लिये लैप लोग नियत स्थानों पर

प्रत्येक साल इकट्ठा होते हैं और अपने रेंडियरों को एकत्रित करते हैं। इसी समय जिन रेंडियरों पर चिन्ह नहीं होता उन पर चिन्ह बनाया जाता है और अपने अपने रेंडियर ढूँढ़े जाते हैं। प्रत्येक परिवार का चिन्ह अलग अलग होता है जिससे वह अपने माल की पहिचान कर सकता है।

रेंडियरों के कानों में चिन्ह बनाये जाते हैं। या तो कान खरोच दिया जाता है या बिन्दी दे दी जाती है अथवा छेद कर दिया जाता है। यह चिन्ह दोनों कानों में भी बनाये जाते हैं। कुल लगभग १८ प्रकार के चिन्ह बनाये जाते हैं।

अधिकांश छोटे रेन्डियरों पर चिन्ह बनाना पड़ता है पर कभी कभी बच्चे दो दो वर्ष तक गुम रहते हैं। और यदि वे मिल गये तो फिर उन पर भी चिन्ह बनाया जाता है।

प्रत्येक अच्छा घूमने वाला लैप अपने प्रान्त के सभी चिन्हों को भली भांति जानता है। यदि किसी को अपने रेन्डियरों के समूह में कई एक अजनबी रेंडियर दिखाई पड़ते हैं तो वह दूसरे लैप लोगों को कहला भेजता है कि अमुक समय पर अमुक स्थान पर सब

रेंडियर एकत्रित किये जावेंगे। उस समय वे अपने पशुओं को आकर ले जांय। मामूली तौर पर लैप लोग सूचना पाने की प्रतीक्षा नहीं करते वरन् प्रत्येक परिवार का पिता अपने प्रान्त में होने वाले प्रत्येक मस्टर (रेन्डियरों का एकत्रित होना) को जाते हैं।

मस्टर का स्थान ऐसा चुना जाता है जहां रेंडियर एकत्रित हो सकें। स्नजुतजोटेस जोग और किसूरिसजोक नदियों के मध्य एक खुले मैदान में एक मस्टर होता है। यह नदियां कटजसजोरे नदी में गिरती हैं। पूर्व की ओर यह भूमि किशोरी पर्वत से सीधे ढाल से घिरी है। उत्तर की ओर आका श्रेणी है। इस श्रेणी पर नौ चोटियां हैं जो बरफ से ढकी रहती हैं। इन श्रेणियों पर वृक्ष नहीं हैं। लैप लैंड में उत्तर की ओर समुद्र तल से २ हज़ार फुट की ऊँचाई तक वृक्ष पाये जाते हैं। वहीं पर सीदा बंश का डेरा था। सीदा बंश ने लगभग १०० गज़ भूमि घेर रक्खा था। चारों ओर बर्च के लट्ठों का बेड़ा बनाया गया था और बीच बीच में बर्च की टहनियाँ लगाई गई थीं। टहनियों के मध्य झाड़ झंकाड़ लगाई गई थी।

लैप लोग रेंडियरों को समूह में एकत्रित करते थे। उनकी स्त्रियाँ और लड़कियाँ झाड़ियों के मध्य में बैठी उनकी बाट जोह रही थीं। कुत्तों को उन्होंने झाड़ियों में बाँध रक्खा था और किसी किसी के गले में लकड़ी के कुन्दे बाँध दिये थे जिससे कि वे दौड़ न सकें, क्योंकि जब रेंडियरों का समूह वहाँ पहुँचने को था तब कुत्तों को रोक रखना था नहीं तो उनके शब्दों के कारण रेंडियरों के भाग जाने का भय था।

धीरे धीरे रेंडियरों का समूह आता दिखाई पड़ा। हाँकने वाले लोग अपने कुत्तों के साथ उसे हाँक रहे थे। समूह इतना बड़ा था कि उनके खुरों (पैरों) से भयानक शब्द हो रहा था और गर्द उठ रही थी। समूह गर्द के बीच में छिप रहा था। बाड़े के द्वार पर जो लट्ठा था उसे एक लड़के ने उठा लिया और रेंडियर भीतर प्रवेश करने लगे। परन्तु इसी समय कुछ रेंडियर भागे, उन्हें पकड़ने का प्रयत्न किया गया। आखिर भागने वालों का नेता द्वार की ओर आया और भीतर घुसा। फिर भी कुछ रेंडियर और उनके बच्चे पहाड़ की ओर भाग गये। उन्हें फिर से पकड़ने के लिये छोड़ दिया गया।

उसके पश्चात् बाड़े का द्वार बन्द कर दिया गया

और लैप लोगों ने शान्ति की ठंडी सासें भरीं। फिर जो लोग थके माँदे थे और कई दिन से ठीक तौर पर भोजन नहीं किये थे वे आराम करने के लिये चले गये शेष लोग अपने अपने कामों में लग गये।

बाड़े के भीतर लगभग १५०० रेन्डियर थे। यह यहाँ एकत्रित लैप लोगों के रेन्डियर के केवल एक अंश थे। बाड़े के भीतर सारे रेन्डियर भौंचक से इधर उधर घूम रहे थे। बच्चे अपनी माताओं की खोज में थे और जवान अपने साथियों को ढूँढ़ रहे थे। वे अपने को एक नवीन स्थान पर पाकर चकित थे।

सारा रेन्डियर समूह बाड़े में वृत्ताकार रूप में घूमने लगा। घूमते घूमते कुछ रेन्डियर एक स्थान पर सिर नीचा कर खड़े हो गये। कुछ समय तक परेशानी की दशा में रहने के पश्चात् वे फिर उसी प्रकार घूमने लगे। उस समय का दृश्य देखने ही योग्य था। उनके खुरों का शब्द चारों ओर गूँज रहा था।

थोड़ी देर पश्चात् लैप लोग स्त्री-बच्चों सहित बाड़े के मध्य में खड़े हो गये और प्रत्येक ने अपने अपने रेन्डियरों को पहचान कर उन पर फंदा डाल उन्हें

पकड़ लिया। कोई कोई रेन्डियर पकड़ा जाना स्वीकार न करते थे और पीछे की ओर भागने का प्रयत्न करते थे। यह बड़े अचम्भे की बात है कि इतने बड़े समूह में लैप लोग घूमते हुये रेंडियरों के मध्य अपने पशुओं को पहिचान उन पर जल्दी से फंदा डाल देते थे।

बच्चों को छोड़ बड़े रेन्डियरों को पकड़ कर ले जाना बड़ा कठिन हो जाता है और उसमें बड़ी चतुरता से काम लेना पड़ता है। बच्चों को लैप लोग गोद में उठाकर जहां चाहते हैं ले जाते हैं।

छांटने के पश्चात् रेन्डियर छोटे छोटे बाड़ों में अलग अलग कर दिये गये उसके बाद बाहर खुले मैदान में निकाले गये और उनकी रखवाली के लिये दो-एक व्यक्ति तैनात कर दिये गये।

बिना चिन्ह वाले रेन्डियर अथवा बच्चों पर छांटते समय चिन्ह बना दिया जाता है। यदि किसी रेन्डियर का मालिक नहीं होता तो उस पर सौतेली मां का चिन्ह दिया जाता है और जब उसका असली मालिक मिल जाता है तो उसे वह वापस दे दिया जाता है।

छांटने के पश्चात् शायद ही कोई रेन्डियर बच

रहता है। आज-कल इस प्रकार जो रेन्डियर बच जाते हैं वह उस प्रान्त के हाकिम को दे दिये जाते हैं।

जब लैप लोग अपने रेंडियरों को आपस में बदलते हैं तो उनके चिन्ह भी गवाहों के सामने बदले जाते हैं। यदि किञ्चित मात्र भी सन्देह किसी रेन्डियर पर होता है तो प्रान्त के हाकिम को अधिकार रहता है कि वह उसे बेच दे। वहाँ पर बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो रेन्डियरों की चोरी करते हैं और एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में घूम घूम कर उनका व्यापार करते हैं। ऐसे लोगों का पता शीघ्र ही लगा लिया जाता है और उन्हें जाति से बाहर निकाल दिया जाता है। वह लोग मज़बूर होकर स्वीडिश लोगों के बीच जाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

मस्टर (एकत्रित होना) के अंत में लैप लोग अपने अपने स्थानों को अपने पशुओं को हाँक कर चले जाते हैं। जो शेष रेन्डियर रह जाते हैं यदि उनके मालिक देर में आये तो उन्हें रखवाली करने वालों के हाथ सस्ते दाम पर बेंच देते हैं।



लैप लोगों का विवाह संस्कार

जब कोई युवक किसी युवती के साथ ब्याह करना चाहता है तो वह उसको ब्याह के लिये रज़ामन्द कर लेता है। जब दोनों राज़ी हो जाते हैं तो युवक अपने किसी मित्र के साथ युवती के माता पिता के झोंपड़े में जाता है। उसकी वहां पर प्रतीक्षा पहले से ही होती रहती है इस कारण उसे अधिक कहने सुनने की आवश्यकता नहीं होती है। वर वहां पर क़हवा तयार करता है और उसे प्रेमिका के माता-पिता के पास पीने के लिये लेजाता है। यदि माता-पिता राज़ी हुये तो वह क़हवा ले लेते हैं और यदि ब्याह करना मंजूर न हुआ तो क़हवा लेने से इन्कार कर देते हैं। इन्कार करने पर प्रेमी तथा प्रेमिका बिना तर्क किये ही अपने भाग्य-निर्णय को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं और सभी लोग अपने अपने स्थान को चले जाते हैं। यदि प्रेमिका के माता पिता राज़ी होते हैं तो वे चाँदी के चम्मच तथा मिट्टी के बर्तन लाते हैं और फिर बड़ी धूम धाम से क़हवा पी जाती है। उसके बाद लड़की भीतर बुलाई जाती है और उसके ब्याह का समय नियत किया जाता

है। लैप लोगों का ब्याह चर्च वाले गाँव में होता है। यदि माता-पिता को ब्याह करना मंजूर नहीं होता तो उनके इन्कार करने के लिये भांति भांति के बहुत से कारण होते हैं। वह कह देते हैं कि युवक बहुत ग़रीब है या वह अच्छे घर का नहीं है अथवा उसे रेन्डियर पालना और चुस्त रहना नहीं आता है।

जब तक लैप युवक के पास रेंडियरों का एक बड़ा समूह नहीं हो जाता वह ब्याह नहीं कर सकते। क्योंकि लैप युवक को अपने और अपनी स्त्री के लिये डेरे का कपड़ा, औज़ार, तांबे के बर्तन, पहिनने के कपड़े और खाने-पीने का सामान लेना पड़ता है। परन्तु अब सभ्यता के प्रचार हो जाने से वहाँ की दशा में भी परिवर्तन हो गया है और मनुष्य बहुत समय पश्चात् ब्याह करते हैं और कभी कभी तो बिल्कुल ब्याह करते ही नहीं हैं। इसी कारण लैप लोगों की संख्या अधिक नहीं बढ़ रही है। लैप लोगों के यहाँ प्रत्येक वंश में कम से कम ५ या ६ बच्चे अवश्य दिखाई पड़ते हैं। लैप बच्चों का पालन पोषण बड़ी परवाह के साथ किया जाता है।

जब बच्चा माता के पेट में रहता है तो उसकी बड़ी रक्षा की जाती है। वे लोग इस बात का बड़ा ध्यान रखते हैं कि गर्भवती स्त्री किसी वस्तु से ठोकर न खावे, वह चौंके नहीं और न किसी भयानक कुरूप वस्तु को ही देखे क्योंकि उनका विश्वास है कि ऐसी वस्तुओं का चिन्ह बच्चे पर अवश्य ही पड़ जाता है।

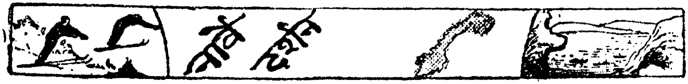
लैप लोग बच्चों की उत्पत्ति के समय लड़के की बड़ी चाह करते हैं। जब बच्चा गर्भ में होता है तभी से वे उसकी पहचान करने लगते हैं। यदि मां दाहिने ओर भारीपन से चलती है तो वे समझते हैं कि पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि उनका कहना है कि मां के पेट में पुत्र का स्थान दाहिनी ओर और पुत्री का बाईं ओर होता है। वे लोग गर्भवती स्त्री की आँखों से भी पहचान करते हैं यदि माँ की आँखें तीव्र होती हैं तो पुत्र और यदि शर्मीली हों तो पुत्री का पेट में होना माना जाता है। इसके अलावा यदि लैप स्त्री अपने पेट के मोड़ के ऊपर पेटी लगाती है तो पुत्र और यदि वह मोड़ के नीचे लगाती है तो पुत्री का पेट में होना माना जाता है।

पुत्र का आदर लैप जाति में पुत्री से अधिक होता

है क्योंकि उनका कहना है कि यदि पुत्र होगा तो वह और अधिक रेन्डियर पालेगा जिससे परिवार के धन की बृद्धि होगी और यदि पुत्री होगी तो वह गृह कार्य में सहकारी तो अवश्य होगी परन्तु व्याह होने के पश्चात् वह दूसरे घर जावेगी और वहां संतान उत्पन्न करके काम बढ़ाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकेगी।

बच्चे के उत्पत्ति के पहिले यदि माता-पिता के ऊपर कोई संकट आया तो वह बच्चा अभागा और यदि कुछ लाभ हुआ तो वह भाग्यवान माना जाता है।

बच्चे के उत्पत्ति के समय दाई (नर्स) बुलाई जाती है। वही बच्चे की 'नार' काटती है और जब तक बच्चा दूध नहीं पीता रखवाली करती है। नर्स ही उत्पत्ति के समय बच्चे को नहलाती है जिससे बच्चा अंधा न हो जाय।



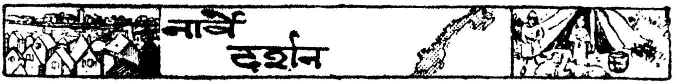
नार्वे प्राकृतिक

स्कैंडीनैविया का समूचा प्रायद्वीप पठारी है। पश्चिमी तेज़ बहने वाली नदियों और पूर्वी बड़ी तथा सुस्त बहने वाली स्वीडन की नदियों के बीच का ऊँचा पठार क्जोलेन (कील) के नाम से प्रसिद्ध है। नार्वे का पठार दक्षिणी-पश्चिमी नार्वे से उत्तरी केप तक और उसके आगे स्पिट्सबर्गेन तक फैला हुआ है। परन्तु यह पठार स्वीडिश सीमा के समीप ६३ उत्तरी अक्षांश के ऊपर अधिक ऊँचा है इसी कारण इसी भाग को पठार का नाम दिया गया है ओर्चेयन (प्राचीन) कटिबंध पश्चिमी तट पर बर्गेन से हेमरफेस्ट तक चला गया है। इस कटिबंध के उत्तरी भाग को पले ज़ोइक (सब से नीची) चट्टानों के टुकड़े कहीं कहीं काटते हैं। पठारी भाग में पथरीली चट्टानों की अधिकता है परन्तु कहीं बिल्लौरी चट्टानें भी पाई जाती हैं। लोफोटेन द्वीप भड़कने वाली सख्त बिल्लौरी सेनाइट और गाब्रो चट्टानों से बना है। यदि हार्डेञ्जर फ्जोर्ड से जोसेन झील तक एक रेखा खींची जाय तो उसके दक्षिण का भाग भी प्राचीन चट्टानों का एक दूसरा बड़ा प्रदेश है।

दक्षिणी भाग से उत्तरी केप (अंतरीप) तक यदि एक खींची जाय तो उसके पूर्व की चट्टानें मोड़दार अथवा परतदार न हो कर चपटी हो परन्तु पश्चिम की ओर की चट्टानें अधिक मोड़दार हैं और उन्हें प्राचीन चट्टानों से अलग करना कठिन हो जाता है। वे सचमुच मोड़दार चट्टानों की एक पर्वतीय श्रेणी बनाती हैं जो बहुत प्राचीन है। नार्वे में ज्वालामुखी पर्वत नहीं है। नार्वे की औसत ऊँचाई १६०० फुट है और सारे योरुप की औसत ऊँचाई १००० फुट है। नार्वे का दक्षिणी-पूर्वी भाग नार्वे का सब से नीचा प्रदेश है परन्तु यह भी पर्वतीय है। पर्वतीय चोटियां सदैव बरफ से जमी रहती हैं। नार्वे-फिनलैण्ड सीमा के उत्तर-पश्चिम में कुछ चोटियां ४ हज़ार फुट से कुछ अधिक ऊँची हैं परन्तु जहाँ पर नार्वे-फिनलैण्ड और स्वीडन की सीमा मिलती है वहां की ऊँचाई अधिक हो जाती है। वहां की ऊँची चोटियां नार्वे की हैं जो उस भाग के धुर उत्तर में हैं। जेगेस्वारे की चोटी लिंग्स और अल्स फजोर्ड के बीच में है। इस चोटी की ऊँचाई ६२८३ फुट है। किस्टेफजेल्ड की चोटी ५६५३ फुट ऊँची है। इस चोटी से बरड़-

एल्व नदी में पानी आता है। सुलिवैगाल्मा की चोटी ६१५८ फुट ऊँची है। यह चोटी ठीक सीमा पर है। समुद्री तट के समीप आर्कटिक वृत्त के केन्द्रीय स्थान पर स्वार्टिसेन नामक बरफ का मैदान तथा हिमानी है जिसमें स्नेटिंड ननाटाक की चोटी ५२४६ फुट है। इसके ठीक दक्षिण आस्टिडेरेने की चोटी ६२७३ फुट और स्टोरा बोर्डफील्ड ५५८७ फुट ऊँची हैं। ६३½ अंश उत्तरी अक्षांश पर ट्रान्धजेम फजोर्ड है। यह दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर २०० मील लम्बाई में फैला है। यह नार्वे के सब से पतले भाग को पूर्वी तथा पश्चिमी दो बराबर भागों में बाँटता है। इस भाग में बहुत सी नदियां हैं। कुछ नदियां उत्तर की ओर और कुछ दक्षिण की ओर बहती हैं। ट्रान्धजेम फजोर्ड के ठीक पूर्व पठार का सबसे निचला तथा पतला भाग स्थित है जिसमें रेलवे लाइन बनी है और आवागमन के लिये बहुत उपयोगी है। इस फजोर्ड से दक्षिण की ओर घाटियों की क़तार और रेलवे लाइन है जो ऊपर ग्लोमेन घाटी और ओसलो को जाती है। ट्रान्धजेम के संकरे भाग से पठार पश्चिम की ओर मुड़ जाता है और अधिक ऊँचा तथा चौड़ा हो जाता है। यह भाग

नार्वे का है। सोगने फजोर्ड ६१० उत्तरी अक्षांश पर स्थित है, इसकी शाखाएँ नार्वे के ऊँचे पर्वतों तक जाती हैं। उत्तर की ओर जोल्स्टेडाल्ब्रे और उत्तर तथा उत्तर-पूर्व की ओर जाटनहीम फजोर्ड है। दक्षिण की ओर ओस और दक्षिण-पूर्व की ओर हार्डेङ्गर है। जाटनहीम के उत्तर पूर्व गुड ब्रांडडस्ल और रोम्सडल के आगे डोवरे फजेल्ड है। इसके दक्षिण-पूर्व रोनडेन फजेल्ड है। हार्डेङ्गर फजेल्ड के दक्षिण हार्डेङ्गर वीदा का पठारी बड़ा मैदान है। इसमें बहुत अधिक झीलें हैं। इस पठार के दक्षिण-पूर्व टेलेमार्क पर्वत का पानी स्केगरक में जाता है। टेलेमार्क पर्वत दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर ढालू है। जोटन हीम में ३० पर्वतीय चोटियां ६५०० फुट से अधिक ऊँची हैं। ग्लिटरकाइंड की चोटी ८१४० फुट ऊँचो है। इस पर १४० फुट बरफ जमी रहती है। यह चोटी नार्वे की सब से ऊँची चोटी है। डोवरे रोनडाने और स्नेहेरा के फजेल्ड ७५५० फुट ऊँचे हैं। रुन्दवासोग्दा की ऊँचाई ६८६० फुट है।



ध्रुव प्रदेश का साहसी यात्री
रोल्ड एमण्डसन

रोल्ड एमन्डसन नार्वे का निवासी था। वह उत्तरी पूर्वी नार्वे के एक प्रान्त में पैदा हुआ था। उसका निवास स्थान समुद्र से दूर था इस कारण वह वैद्यक विषय का एक विद्यार्थी बन गया था। परन्तु वह समुद्री जीवन अधिक पसंद करता था। जब वह २६ वर्ष का हुआ तो १६०३ ई० में वह उत्तरी-पश्चिमी मार्ग से ध्रुव प्रदेश की खोज में निकला। उसके साथ ६ आदमी थे। वह ४७ टन का एक जहाज़ लेकर गया था और उसने उत्तरी ध्रुव के स्थान का पता लगाया।

उत्तरी ध्रुव का मार्ग बड़ा दुर्गम सुनसान और बर्फीला था। मार्ग का ठीक पता न था। शीत की अधिकता थी। कभी कभी सूर्य का प्रकाश होता था। प्राकृतिक कठिनाइयां अधिक थी। बरफीला मार्ग था जिसके आदि और अंत का पता न था। ऐसे मार्ग में चलना अपने जीवन को संकट में जान बूझ कर डालना था।

ध्रुव की यात्रा में साहस, पराक्रम और धीरज की

ही केवल आवश्यकता नहीं थी वरन् उसमें मनुष्य को अपने प्रत्येक गुणों और चतुर्ताओं का प्रयोग करना था। यात्री को ज्ञान, विद्या, शांति, आभास, आशा और आत्म-बलिदान करने की आवश्यकता थी। उसे अपने मित्रों के प्रति स्वामि-भक्ति, सच्चाई, क्षमा और आज्ञा आदि गुणों को पालन करने के सच्चे भावों का प्रदर्शन करना था। जिन लोगों ने उपरोक्त बातों का पालन करके ध्रुव प्रदेश की यात्रा की है उनका नाम आर्कटिक प्रान्त के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से सदैव लिखा जावेगा।

जिन लोगों ने समस्त संसार के २ अरब मनुष्यों का न्याय करके ध्रुव प्रदेश की यात्रा की, उनकी यात्रा का वर्णन सुन कर सभी नर नारियों को आश्चर्य और भय का आभास होता है। जिस मार्ग में वे यात्री जाते थे वहां शान्ति थी, किसी प्रकार किञ्चित् मात्र भी शब्द सुनाई नहीं देता था। कहीं कहीं पर तो ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि यात्री लोग भूत-पिशाचों के देश में यात्रा कर रहे हों। और उन्हें उन्हीं की आवाज़ें सुनाई पड़ती थीं।

अन्टार्क्टिक प्रदेश ही ध्रुव प्रदेश का एक ऐसा भाग है जहाँ पर समुद्र के सिवा और कहीं पानी का नाम नहीं है। समुद्र भी बहुधा बरफ से जमा रहता है। अन्टार्क्टिक प्रान्त ध्रुव प्रदेश को घेरे हुये है। वहाँ पर सरिता और झीलें नहीं हैं। वहां केवल बर्फीले सरोवर हैं। वहां नदियाँ नहीं हैं ग्रीष्म काल में हिम की नदियाँ कहीं कहीं बहती दिखाई पड़ती हैं। अन्टार्क्टिक में किसी प्रकार के भी वृक्ष अथवा फूल नहीं पाये जाते हैं। खेती करने योग्य भूमि बिलकुल नहीं है। वहां पर किसी प्रकार के लोग नहीं रहते हैं और न किसी प्रकार के स्थली पशु ही पाये जाते हैं। वहाँ पर कभी भी कोई स्त्री नहीं गई है।

अन्टार्क्टिक प्रान्त की हवा समस्त संसार में सबसे अधिक स्वच्छ है। वहाँ की वायु में कीड़े बिलकुल नहीं होते हैं। ग्रीष्म काल में वहाँ के सूर्य प्रकाश की छटा बड़ी सुहावनी होती है। वहाँ सूर्य ऊँचे पर नहीं उठता, बस नीचे ही रहता है और उसकी किरणें बरफ के ऊपर पड़ती हैं तो वहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता और अधिक हो जाती है।

वहाँ पर दूर दूर पर जो आवाज़ पैदा होती है

वह भी साफ साफ सुनाई पड़ती है मालूम होता है कि शब्दों की आवाज़ जादू द्वारा पहुँचाई जाती है। ह्वेल मछली के साँस लेने का शब्द पाँच मील तक, कुत्तों का भौं-भौं तथा आदमी के चिल्लाने का शब्द सात सात मील तक सुनाई पड़ता है। इसी शान्तिमय स्थिति में जब कोई बर्फीला तूफान आता है और बरफ के कगारों के चलने अथवा गिरने का शब्द होता है तो बड़ा ही सुहावना लगता है।

अंटार्किटका प्रदेश का विस्तार संसार में सभी देशों से अधिक संदेहजनक है। योरुप और आस्ट्रेलिया के महाद्वीप (५५,००,००० वर्ग मील) समूचे उसके भीतर समा सकते हैं। एशिया महाद्वीप सभी महाद्वीपों से अधिक ऊँचा है। एशिया की औसत ऊंचाई ३ हज़ार दो सौ फुट और योरुप की ६४० फुट है। परन्तु अन्टार्किटका की ऊँचाई सामान्य रूप से ६ हज़ार और ७ हज़ार के बीच में है।

इसी नये अजनबी प्रान्त में एमन्डसन और स्काट ने अपनी खोज की और संसार को अंटार्किटक प्रदेश का समाचार सुनाया।

एमन्डसन को लोगों ने बहुधा तर्क किया है क्योंकि जब स्काट दक्षिण की ओर यात्रा करने की सोचता था तो वह उत्तर की यात्रा के लिये तयारी करता था परन्तु जब पियरी की सफलता का समाचार मिला तो उसने अपनी मति यथा योजना बदल दिया।

उत्तरी ध्रुव की भांति दक्षिणी ध्रुव के पता लगाने की कीर्ति लेने की इच्छा सभी लोगों के हृदय में थी। जब पियरी को उत्तरी ध्रुव के पता लगाने का गौरव प्राप्त हुआ तो एमन्डसन ने तार द्वारा स्काट को सूचित किया कि वह दक्षिणी ध्रुव का पता लगाना चाहता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कदाचित् उस समय लोग ध्रुव प्रदेश की दौड़ कर रहे थे। बहादुर पता लगाने वाले ध्रुवों की खोज करने के लिये उतावले थे। वे जब कभी भी किसी की खोज के बारे में सुनते थे तो उन्हें भी नई खोज करने का नशा चढ़ जाता था।

पहले एमन्डसन का इरादा (अंग्रेज़ अन्वेषक) स्काट के बतलाये हुये मार्ग द्वारा ध्रुव की खोज लगाने का न था। दूसरे नार्वे के लोगों ने जिस मार्ग का निर्माण किया था उससे स्काट बिलकुल ही अनभिज्ञ

था। इस लिये वह नार्वे वालों की योजना के अनुसार काम करने में असमर्थ था। स्काट ने घोषणा की थी। कि उसकी यात्रा वैज्ञानिक है, परन्तु एमन्डसन ने कहा था कि वह केवल ध्रुव प्रदेश का किसी न किसी प्रकार पता लगाना चाहता है।

एमन्डसन के ध्रुव यात्रा का समाचार जब स्काट को पता चला तो उसे बड़ी निराशा हुई परन्तु फिर भी किसी प्रकार की परवाह न करते हुये वह यात्रा करने के लिये तयार हुआ। उसे आशा थी कि वह एमन्डसन से पहले ध्रुव पर पहुँचेगा। जब स्काट ध्रुव से २७ मील की दूरी पर था तो उसने अपनी डायरी में लिखा "अब यह बात निश्चित जान पड़ती है कि नार्वे का झंडा हमारे झंडे के पहले ही ध्रुव पर गड़ जावेगा।" जब वह ध्रुव के समीप पहुँचा और कुत्तों के चलने के चिन्ह देखे तो वह घृणा की हँसी हँसा और आशा हुई कि अन्त समय तक में वह अवश्य ही एमन्डसन से पहले ध्रुव का पता लगा लेगा।

स्काट को ध्रुव प्रदेश की दौड़ में बहुत सी रुकावटें हुईं। एमन्डसन ने नार्वे से चलने के पहले ही अपनी

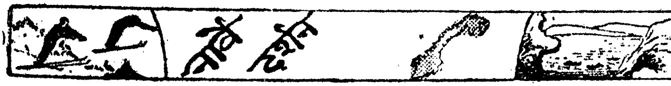
यात्रा का कार्य-क्रम ठीक ठीक बना लिया था। सनेउ पहले से ही भविष्य वाणी कर ली थी कि वह किस दिन ध्रुव का पता लगा कर अपने फ्राम नामक जहाज पर लौट कर आवेगा। उसने अपने साथ में सुयोग्य कुत्ते हांकने वाले, स्की पर दौड़ने वाले और बरफ पर चलने वाले चतुर अभ्यासी लोगों को चुन लिया था। उसने यात्रा में वहां की सुन्दर वस्तुओं और वैज्ञानिक ज्ञान की क्षणिक भी परवाह नहीं किया। वैज्ञानिक दृष्टि से उसकी सफलता बेकार है। परन्तु फिर भी वह एक बड़ा खोज करने वाला, संगठन कर्ता और बहादुर था। यद्यपि उसके बाद बहुत से लोगों ने ध्रुव प्रदेश की खोज किया परन्तु दक्षिणी ध्रुव के पता लगाने का सेहरा एमन्डसन को ही प्राप्त हुआ।

दो बातों में एमन्डसन स्काट का मास्टर था एक तो यह कि एमन्डसन ने अपने जहाज का अड्डा ह्वेल्स की खाड़ी में बनाया था और अँग्रेज़ों ने इवाँस की अंतरीप में अपना जहाज ठहराया था। इवांस की खाड़ी ध्रुव से अधिक दूर है। इस प्रकार एमन्डसन की लगभग १०० मील की यात्रा कम हो गई थी। ह्वेल की खाड़ी एक भयानक स्थान था, यह बात सभों को मालूम थी

और इसी भय के कारण शैकलेटन उसे किनारे करके चला गया था। परन्तु एमन्डसन ने अपने को ख़तरे में डाल दिया और ह्वेल खाड़ी में जा कर अपने जहाज को ठहराया दूसरी बा यह थी कि एमन्डसन को विश्वास था कि ध्रुव तक वह कुत्तों की गाड़ी द्वारा ही पहुँचने में सफल होगा परन्तु स्काट का विश्वास था कि किसी एक चीज़ पर विश्वास न करना चाहिये इस लिये वह अपने साथ में टट्टू और कुत्ते रखे हुये था। साथ ही साथ वह पैदल भी चलता था और अपनी गाड़ियां वह स्वयम् खींचते थे।

एमन्डसन का जत्था जो दक्षिण ध्रुव की यात्रा के लिये रवाना हुआ था उसमें पांच आदमी, स्वयम् एमन्डसन, ब्जालैण्ड विस्टिंग, हसेल और हनसेन थे। पांचों आदमियों का समूह १६ अक्तूबर सन् १६११ को रवाना हुआ था। उनके साथ में ५२ कुत्ते थे। यह कुत्ते बड़े मजबूत थे। इन्हीं कुत्तों के सहारे ४०० मील की यात्रा तै हुई थी। पांचों व्यक्ति स्लेज गाड़ियों पर चढ़े थे और कुत्ते उन्हें खींचते थे।

१० नवम्बर को हिमानी निकलने वाले स्थान के



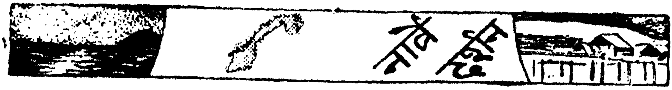
समीप पहुँचे। १२ नवम्बर को वे एक ऐसे प्रान्त में पहुँचे जिसको संसार नहीं जानता था उसका उन्होंने कारमेनलैण्ड नाम रक्खा। उसके बाद उन्हें बड़ा पठार मिला जिसमें वे बड़ी शीघ्रता से आगे बढ़े और कभी कभी दिन भर में २० मील की यात्रा तै करते थे। १४ दिसम्बर को वे अपने निश्चित स्थान पर पहुँच गये।

उन्हें अपनी यात्रा में बर्फीले तूफानों का सामना करना पड़ता था जिससे उन्हें बड़ा कष्ट होता था। वे बरफ़ की झड़ी के कारण अंधे हो जाते थे और कुहरे में मार्ग भूल जाते थे। एक स्थान पर उन्हें इतनी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि उन्होंने उसका नाम हेलगेट (नरक द्वार) रक्खा। उन्हें कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता था कि वे बर्फीले तूफान के जाल में फँस गये हैं, जिसके नीचे बड़ी दरारें और ऊपर पर्वतीय शिलाएं थीं। वहां पर बरफ के बड़े बड़े करारे भयभीत करते हुये नीचे खिसक रहे थे। ऐसे स्थान पर पहुँच कर उन्हें स्लेज गाड़ियों को छोड़कर आगे पथ की जांच करनी पड़ी उन लोगों ने अपने आप को एक रस्सी में बांधा और ऊपर चढ़े। परन्तु जब चढ़ाई समाप्त हो गई

तो वह कुत्ते बड़े बेग से दौड़ने लगे। कभी कभी तो वे ६ मील प्रति घंटे की चाल से दौड़ते थे; परन्तु उन बेचारों को ऐसा कष्ट के बदले में मृत्यु का सामना ही करना पड़ता था। ध्रुव तक पहुँचते पहुँचते केवल १८ कुत्ते शेष रह गये बाक़ी सभी मर गये।

१४ दिसम्बर को वे अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। उनके शुभागमन करने के लिये उन्हें वहां न तो सूर्य का प्रकाश हुआ और न बरफ का तूफान ही आया। दोपहर के बाद उन्हें प्रतीत हुआ कि वे अपने निश्चित स्थान पर पहुँच चुके हैं। वे उस समय बड़े प्रसन्न थे क्योंकि उन्होंने ध्रुव का पता लगा लिया था परन्तु वे अधिक बात चीत नहीं करते थे उनकी प्रसन्नता उनकी आँखों से टपक रही थी। हनसेन मार्ग का पता लगाने के लिये आगे भेजा गया था उसने अपनी गर्दन उठा कर सामने देखा तो उसे चारों ओर अपार समतल मैदान के सिवा और कुछ दिखाई न पड़ा। उसने 'हाल्ट' (रुक जाओ) शब्द का उच्चारण किया।

यह शब्द ३ बजे दिन को सुनाई पड़ा था। डेनमार्क की जीत ध्रुव की दौड़ में हुई। स्लेज गाड़ियों की



नापों को देखा गया तो सभों ने पूरी दूरी बतलाई। उन्हीं के सहारे वे लोग ध्रुव पर पहुँचे थे। उस समय उन्हें निश्चित तौर पर विश्वास नहीं था कि वे ठीक ध्रुव पर खड़े थे। परन्तु बाद को उन्होंने तै किया कि वे उस स्थान के चारों ओर १२½ मील का एक वृत्त बनावेंगे जिससे वे कह सकें कि वे ध्रुव पर पहुँच गये हैं।

एमंडसन ने कुछ समय बाद में कहा "मैं कह नहीं सकता—यद्यपि मैं जानता हूँ कि यह कहना अधिक प्रभावशाली होगा कि मेरे जीवन का आदर्श मुझे मिल चुका। परन्तु ऊपरी तौर पर यह एक कल्पित कथा होगी। सच्ची बात यह है कि मैंने कभी भी किसी व्यक्ति के बारे में नहीं सुना जो अपनी इच्छा के विरुद्ध कार्य करे जितना कि मैंने किया है। मैं लड़कपन से ही उत्तरी ध्रुव के पता लगाने का इच्छुक था परन्तु आज मैंने उसके विपरीत दक्षिणी ध्रुव पर खड़ा हूँ। क्या ऐसी कोई दूसरी बात उलटी-पुलटी सोची जा सकती हैं?"

पांचों साथी वहां एकत्रित हुये और उन्होंने एक

दूसरे को हाथ मिलाकर बधाई दिया। एमन्डसन ने कहा कि हमें इन्हीं हाथों से यहां नार्वे का झंडा गाड़ना चाहिये। थोड़ी देर तक वहाँ खड़े रहे आखिर उनके नेता ने यह कहते हुये झंडा गाड़ दिया। ओ प्यारे झंडे! हम तुम्हें इस प्रकार दक्षिणी ध्रुव पर गाड़ते हैं और जहां पर यह झंडा फहरा रहा है, इस मैदान का नाम हम सातवें हाकेन राजा का पठार रखते हैं।

झंडा संस्कार के पश्चात् उन्हें डेरा डालना, भोजन बनाना और वहाँ का निरीक्षण करना था। परन्तु उसी समय उनका स्वामि भक्त हेल्जे नामक कुत्ता शीत तथा थकाई के कारण मर गया। कुत्तों ने उसे बांट खाया। और २ घंटे में उसकी पूँछ तथा दांत के सिवा और कुछ शेष न रह गया।

उन लोगों की प्रसन्नता की सीमा न थी इसलिये जो भी वस्तु उनके सामने आ जाती थी उस पर वे "दक्षिणी ध्रुव १६११" लिखते जाते थे। आखिरकार जब विस्टिंग का हाथ लिखते लिखते थक गया तब वे तम्बाकू पीते हुये थकावट के कारण अपने झंडे के



समीप सो गये इस प्रकार दक्षिणी ध्रुव पर उन्होंने अपनी प्रथम रात बिताई।

विस्टिंग, हसेल और ब्जालैण्ड ने काले झंडे लेकर (जिससे कि उनकी पहचान हो सके) १२ मील का वृत्त बनाया। यदि उस समय प्रकृति उनके विरुद्ध होती अथवा उनका अभाग्य होता तो वहां उनके जीवन का अन्त होना निश्चय ही था। परन्तु भाग्य और प्रकृति दोनों उनके अनुकूल रहे और वे अपना कार्य पूरा करके अड्डे पर लौट आये।

१७ सितम्बर को उन्होंने उस स्थान का नाम पोलहीम रक्खा और नाम संस्कार में ब्जालैण्ड ने अपने मित्रों को एक सिगार का बक्स पुरस्कार में दिया और एक भाषण दिया।

उन्होंने वहां पर बहुत सी तस्वीरें खींची उसके पश्चात् एमन्डसन ने वहां एक डेरा तान दिया और उसके अन्दर एमन्डसन ने नार्वे के राजा के लिये कुछ पत्र रख दिये जिससे यदि वे घर न पहुँच सकें तो उनका हाल उनके राजा को किसी दूसरे यात्री द्वारा विदित हो जाय। एमन्डसन जानता था कि स्काट उसके

बाद वहाँ आ रहा है इसलिये उसने वहां पर उसके लिये एक वृत षडांश क्षितिज वाले शीशे (इस यंत्र से कोण नापा जाता है) के साथ रख दिया। उन्होंने वहां पर एक हिपसो मीटर का बक्स, तीन रेंडियर के खाल के जूते कुछ दस्ताने और कुछ कामिट रख दिये।

एमंडसन ने कप्तान स्काट के लिये यह पत्र भी लिख दिया था :—

"प्यारे कप्तान स्टाक! शायद हमारे बाद तुम्हीं प्रथम मनुष्य होगे जो इस प्रान्त में पहुँचोगे इसलिये मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे पत्र महाराज हैकन सातवें को पहुँचा देना। जो वस्तुयें डेरे में छोड़ी जाती हैं यदि वे आप के काम की हों तो आप उनका प्रयोग खुशी से कर सकते हैं। जो स्लेज गाड़ी डेरे के बाहर है वह शायद आप के काम आ सके। आदर सहित, ईश्वर तुम्हें सुरक्षित घर पहुँचावे।

तुम्हारा प्रेमी,

रोल्ड एमन्डसन।"

सभी लोगों ने डेरे के खम्भे पर लगी हुई तख्ती पर अपने हस्ताक्षर किये। उन्होंने अपना झंडा वहां

पर मज़बूती के साथ लगा दिया था। उसके बाद वे कुछ समय तक नंगे सिर गड़े रहे और फिर वापस लौट पड़े। ६ जनवरी को रास आइस शेल्फ पर वापस आये। २५ जनवरी को जैसा कि एमन्डसन ने पहले ही भविष्य वाणी की थी कि वे अपने जहाज़ फ्रांस में पहुँचे। उन्हें १८६० मील की यात्रा में ६६ दिन लगे थे। उन्होंने ३ महीने में संसार के मान चित्र को बदल दिया।

अब एमन्डसन भी बरफ में पड़ा सो रहा है। १६२८ ई० में वह स्वयंसेवक बन कर जनरल नोबाइल को ढूंढ़ने गया था। नोबाइल का वायुयान उत्तरी ध्रुव से लौटते समय टूट गया था। एमन्डसन स्पिट्स बर्जेन से चला था उसके पश्चात् उसका कुछ समाचार नहीं मिला। स्काट के साथ ही साथ उसका नाम भी इतिहास में चला गया।

देश दर्शन

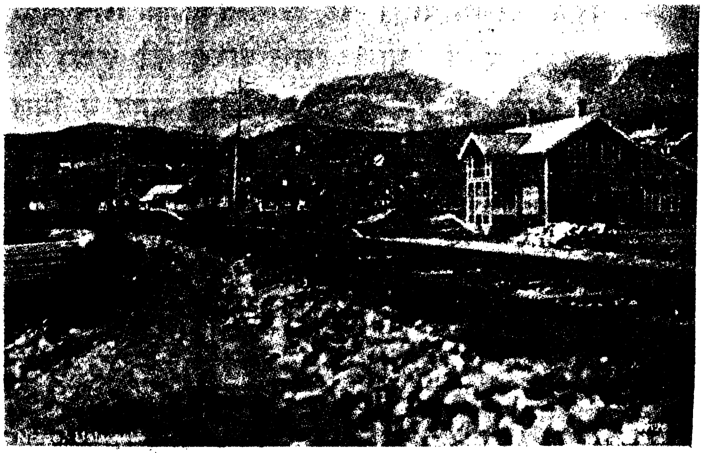
मेरी नार्वे-यात्रा

नार्वे देश में मुझे दो बार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहली बार बर्लिन से गया था। जिस रेलगाड़ी पर मैं बर्लिन में सवार हुआ उसी में कुछ डब्बे ओस्लो नगर के लगे थे। बाल्टिक सागर को ये डब्बे किस प्रकार पार करेंगे यह प्रश्न मन में बार बार उठ रहा था। अन्त में स्थल भाग की यात्रा समाप्त हुई और समुद्र सामने दिखाई देने लगा। जहाज़ इस प्रकार लगा था कि वह स्थल की रेल की पटरियों को छूने लगा। फिर जहाज़ पर बिछी हुई रेल की पटरियां स्थल से मिल गईं। इसके बाद जिस गाड़ी के डब्बे में मैं बैठा था वह जहाज़ पर चढ़ गया। मुझे गाड़ी से उतर कर जहाज़ पर चढ़ने की आवश्यकता नहीं हुई। इस प्रकार मैं रेलगाड़ी पर सवार था और मेरी रेलगाड़ी जहाज़ पर सवार थी कुछ ही घंटों में यह यात्रा समाप्त हो गई। दूसरी ओर स्थल को इंजिन में रेल के डब्बों को उतार लिया।

•

पहले स्वेडन देश में होकर गुज़रना पड़ा। गोटा या गोटेन बर्ग में काफी देर तक रेलगाड़ी ठहरी। रेलवे

स्टेशन से शहर का कुछ भाग और विशेष कर बिजली का कारखाना भली भांति दिखाई देता था। रास्ते का दृश्य बड़ा सुन्दर था। धूल का कहीं नाम न था। ज़मीन अक्सर पथरीली थी। लेकिन फिर भी देवदारू



नार्वे देश का एक रेलवे स्टेशन

और दूसरे पेड़ दिखाई देते थे। ओस्लो के पड़ोस में पेड़ और घने हो गये। ओस्लो की स्टेशन बहुत बड़ा नहीं है। भीड़ भी कम रहती है। अधिकतर यात्री सीधे जल मार्ग से आते हैं। गरमी की ऋतु में यात्रियों की संख्या और अधिक बढ़ जाती है। यात्रियों की अधिकता से

पास वाले होटल में स्थान न था। इसलिये मुझे कुछ दूर वाले होटल में ठहरना पड़ा।

होटल का प्रबन्ध एक महिला के हाथ में था। उसका प्रबन्ध बहुत अच्छा था। वह आगन्तुकों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करती थी। इससे अच्छा ही हुआ कि पास वाले होटल में भीड़ के कारण मुझे जगह न मिल सकी। उस होटल की प्रबन्ध करने वाली महिलायें कुछ बाजारू स्त्रियों की तरह मालूम पड़ती थीं। लेकिन इसे होटल के पड़ोस में शराबियों का अड्डा था। इसलिये सावधानी के लिये कभी एक मार्ग से और कभी दूसरे मार्ग से इधर आता जाता था।

दूसरे दिन शौचादि से निवृत्त हो समुद्र स्नान के लिये गया। स्नान के घाट पर पहुँचने के लिये स्टीमर का बहुत थोड़ा किराया लगता था। घाट पर कुछ फीस देने पर कपड़े रखने के लिये एक आलमारी और पहनने के लिये जांघिया मिलती है। यहां गरमी की ऋतु में भी बड़ा जाड़ा पड़ता है और हवा में नमी होने के कारण कपड़ा बहुत देर में सूखता है। इसलिये कोई नहाने वाला अपना कपड़ा भिगोना पसंद नहीं करता

है। कुछ ही देर स्नान करने पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और स्नान करने वाला कांपने लगता है।

यहां का अजायबघर ध्रुवों की सामग्री के लिये संसार प्रसिद्ध हैं। नार्वे ने ध्रुवों के यात्री और अन्वेषक तयार किये। वीर नानसेन और एमण्डसन की स्मृति दिलाने वाली उनकी स्लेज गाड़ियां और कई दूसरी चीजें रक्खी हुई हैं। आधा दिन ओस्लो के उस पार एक पुराने गिरजे और ग्राम्य जीवन के देखने में बिताया गया। लकड़ी से घिरा हुआ बाड़ा देवदारू का बन और शान्त वायुमंडल अपने गढ़वाल के पहाड़ी गांव की याद दिलाता है। लेकिन यहां की हृष्ट पुष्ट गाय, पढ़े लिखे स्वाधीन किसान और बिजली से प्रकाशित स्वच्छ घर अपने देश के पहाड़ी भागों में बहुत कम देखने को मिलते हैं।

ओस्लो के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद तीसरे दिन बर्गन के लिये प्रस्थान किया। रेल के टिकट के अतिरिक्त यहां स्थान के लिये अलग टिकट लेनी पड़ती है। जो लोग खिड़की के पास बैठते हैं उन्हें कुछ अधिक किराया देना पड़ता है। इस यात्रा के अद्भुत

दृश्यों को देखने के लिये मैंने खिड़की के पास वाली ही (सीट) जगह ली। वह भी उस डब्बे में जहां सिगरट पीने वाले न थे। यहां सिगरट पीने वालों और न पीने वालों के लिये अलग अलग डब्बे रहते हैं।

खिड़की के पास बड़ा लम्बा चौड़ा एक शीशा लगा था। इससे बाहर का दृश्य साफ दिखाई देता है। धूल से मुक्त स्वच्छ वायु मंडल में यहां की नंगी चट्टानें, हिमागार जंगली हिरण, लटकती हुई नदियां और हरे चरागाह बड़े सुहावने लगते थे। पहले गाड़ी चढ़ती गई, कुछ समय के बाद प्रायः सम तल पठार मिला। स्टेशनों पर स्थानीय सुन्दर दृश्यों के चित्र बिकते थे। कहीं कहीं पर बरफ के वेग को रोकने के लिये रेल की पटरी के दोनों ओर लकड़ी का विचित्र ढांचा बना हुआ था। शाम के समय गाड़ी बर्गेन के निकट पहुँची। लेकिन यहां की शाम कहीं दस बजे रात को होती है।

बर्गेन के निकट फिर हरियाली का दृश्य मिला। एक अच्छे होटल का पता रास्ते में ही एक अँग्रेज़ी जानने वाली महिला ने बता दिया।

होटल में बड़ा आराम था। लेकिन रात के १२ बजे तक यहाँ नाच और गाना होता रहा था। आज तैरने वालों का एक विशेष उत्सव था तैरने के क्लब में लड़के और लड़कियाँ दोनों ही शामिल थे। बर्गेन नगर भी कई भागों में बसा है। समुद्र के पास वाले भाग में मछली का बाज़ार है। ऊपरी भाग में फर नमदे की दूकानें हैं। नमदे बड़े महँगे थे। लेकिन नमूने के लिये सील की खाल का बना हुआ जूता मैंने भी मोल लिया। दोपहर को यहाँ का पहाड़ी ट्रैम कार की यात्रा की।

ट्रैमगाड़ी के डब्बे मोटे मोटे फौलादी रस्सों से सधे रहते हैं और बिजली के ज़ोर से चलते हैं। आने जाने के रास्ते हैं। जब एक ट्रैमगाड़ी ऊपर चढ़ती है तभी दूसरी गाड़ी नीचे उतरती है। नये लोगों को ऊपर चढ़ते समय डर लगता है। ज़रा भूल हो तो डब्बा चकना चूर हो जावे। लेकिन चलाने वाले बड़े अनुभवी होते हैं। ऊपर पहुँच कर ड्राइवर ने मेरा एक चित्र लिया। यहाँ एक छोटी सी दूकान भी है। चोटी से बर्गेन शहर और बन्दरगाह का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। इसी यात्रा में कुछ जर्मन और इटेलियन यात्री

मिले जो उत्तरी भाग के निशीथ (आधी रात के) सूर्य को देखने जा रहे थे। कौन जानता है कि ऐसे ही लोगों ने नार्वे के फौजी भेद बाहर पहुँचाये हैं। कुछ बड़े अँग्रेज़ मछली पकड़ने और सैर करने आये थे। नार्वे देश में मर्दों की अपेक्षा स्त्रियों की अधिकता है। बहुत सी लड़कियों का व्याह नहीं हो पाता है। उन्हें अविवाहित जीवन बिताना पड़ता है। पर वे शिक्षा से सम्पन्न होती हैं।

तीसरे दिन स्टीमर द्वारा बर्गेन से न्यूकासेल (ब्रिटेन) के लिये प्रस्थान किया।
